चैतन्य लहरी

सितम्बर–अक्टूबर, 2004

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

इस अंक में

3 गुरु पूजा, कबेला–4.2004

6 शास्त्रों में "ऊँ" की व्याख्या

8 शपथ (युवा शक्ति की)

9 संगीत अकादमी का शुभारम्भ, वैतरणा–1.1.2003

11 दिवाली पूजा लास एंजलिस, 9 नवम्बर, 2003

12 परम पूज्य श्री माताजी का सहजयोगियों को आदेश

15 गुरु पूर्णिमा– 1.6.1972

28 हर श्वास में सहजयोग को प्रस्थापित क[illegible] – [illegible].1.197[illegible]

37 कुण्डलिनी और कल्कि (नवरात्रि पूजा– 28.09.1979)

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
हॉटल ग्रेस के पीछे, पॉड रोड, कोठरुड
पुणे - 411 029

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
W.H.S 2/47 कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015
मोबाइल : ९८१०४५२९८१, २५२६८६७३

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:-

श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमेंट, कालका जी
नई दिल्ली-110 019
फोन : 26216654, 26422054

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110 034
दूरभाष : 011-55356811
प्रात: 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं: 08.30 बजे ये 10.30 बजे

गुरु पूजा

कबेला लीगरे, जुलाई 4,2004
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
(हिन्दी रूपान्तर)
(Internet Version)

गुरु पूजा के लिए आए इतने अधिक सहजयोगियों को देखकर मुझे अत्यन्त खुशी हो रही है और अत्यन्त आन्नद हो रहा है। ये सोचना अत्यन्त सुखकर है कि इतने सारे आप लोग मेरे शिष्य हैं। कभी आशा नहीं की थी कि मेरे इतने अधिक अनुयायी होंगे।

मैं आशा करती हूँ कि आप सब मेरे प्रेम सन्देश का अनुसरण करेंगे। प्रेम के विषय में मुझे कुछ नहीं कहना। प्रेम पूर्ण उपहार है।दूसरों की भावनाओं को महसूस करने का पूर्ण उपहार। न इसमें कोई बातचीत है और न बहस मोबाहिसा। आप तो बस प्रेम को महसूस करते हैं। मैं कहूँगी कि प्रेम को महसूस करने के लिए व्यक्ति के पास हृदय होना आवश्यक है। परन्तु यह हृदय आप किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं ? यह आपके करने की चीज नहीं है, सभी कुछ मौजूद है। तो इसका वरदान तो आपको पहले ही दिया जा चुका है--ये आपके पास है तथा उस प्रेम को आप महसूस कर सकते हैं। ये अत्यन्त आनन्ददायी एवम् शान्ति प्रदायक है।

प्रेम की अपनी ही खूबियां होती हैं और इसकी एक खूबी यह है कि वह प्रेम को समझती है। इसे शब्दों,विचारों में नहीं समझा जा सकता। यह तो अन्तस में समझा जाता है। प्रेम का अनुभव अन्दर होता है और यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस महत्वपूर्ण भाग को व्यक्ति ने महसूस करना है कि प्रेम को केवल महसूस किया जा सकता है। इसके विषय में आप बातचीत नहीं कर सकते, इसका दिखावा नहीं कर सकते। यह तो अन्तःस्थित है, इसे महसूस कर सकते हैं।

यही कारण है कि आज आपका गुरुपर्व है और इस पर्व में आप अपने गुरु के प्रति उस प्रेम को महसूस कर सकते हैं। वह अहसास अन्दर है और अपने अपने अन्दर ही आप इसे महसूस कर सकते हैं। अतः हमें समझना है कि यह दिखावा नहीं है, न ,कुछ और भी नहीं है, केवल अपने अन्दर का अहसास है जिसे आप जानते हैं कि आपमें परमेश्वरी प्रेम है। क्योंकि यह अन्दर मौजूद है इसलिए आप इसे पा सकते हैं।कोई अन्य न आपको यह प्रेम दे सकता है, न ही कोई इसे बेच सकता है, न कोई इसे बांट सकता है। यह तो बस मौजूद है। इस प्रेम को महसूस किया जा सकता है और बांटा भी जा सकता है। किसी अन्य से इसका कुछ लेना देना नहीं। दूसरे लोग आपको प्रेम करते हैं या नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये अहसास तो आपके अन्दर मौजूद है, आपके अन्दर यह गहनता है और इसका आप आनन्द लेते हैं। ये सबके सामर्थ्य पर निर्भर करता है। सभी में यह प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। कभी कभी आपको लगता है कि आपने इसे खो दिया, कभी आपको लगता है कि आपने इसे पा लिया, परन्तु यह तो सदा सर्वदा विद्यमान है।

इसी प्रकार प्रेम का स्रोत भी शाश्वत है। आप इसकी गहनता को नाप नहीं सकते। ऐसा करना कठिन है। ये सभी मानवीय अभिव्यक्तियों से परे है और आपकी सूझ बूझ को दर्शाता है, प्रेम की आपकी सूझ बूझ को, जिसमें कोई शब्द नहीं होते, जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती, स्वतः ही आप जान जाते हैं कि मेरे अन्तस में प्रेम का यह गुण है और अपने अन्दर मैं इस प्रेम का आनन्द ले सकता

हूँ। ये अद्वितीय उपहार है जो बहुत कम मनुष्यों को प्राप्त है। पशुओं से भी आप देखते हैं कि लोगों को प्रेम है। परन्तु वह प्रेम गहन नहीं है, वो अर्थहीन है। हो सकता है कि इसका कोई उद्देश्य हो परन्तु यह मानवीय नहीं है। अतः इसमें मानवीय प्रेम के सौन्दर्य का अभाव है, मानवीय प्रेम की सूझ–बूझ की कमी है।

प्रेम की व्याख्या या वर्णन शब्दों में करना आसान नहीं है। इसे तो आप अपने अन्दर ही महसूस कर सकते हैं। एक बार जब आप इस प्रेम को महसूस कर लेंगे तो आप महसूस कर पाएंगे कि आप का गुरु कौन है और यह भी जान पाएंगे कि कौन आपको सिखा रहा है, कायल कर रहा है और एक विशेष प्रकार से जीना सिखा रहा है। ऐसा कर पाना सम्भव है। आप स्वयं को इसमें डुबो दें।

यह देख कर अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि किस प्रकार लोग परस्पर प्रेम करते हैं। तत्पश्चात यह प्रेम फैलता है। प्रेम से प्रेम बढ़ता है। किसी व्यक्ति में यदि प्रेम है तो यह फैलता है। उसे किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है, प्रेम को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं। यह तो फैलेगा। और यही व्यक्ति को सीखना है–दूसरे व्यक्ति में प्रेम को किस प्रकार देखना है।

जो भी हो सहज घटित होने के कारण हम लोग पहले से ही प्रेम मग्न हैं। हम सब प्रेम करते हैं और प्रेम का आनन्द लेते हैं। यह बात हमारे चेहरों पर झलकती है कि अपने चरित्र में हम प्रेम मग्न हैं और यह प्रेम प्रत्यक्ष दिखाई देता है। यह बहुत बड़ा वरदान है कि आप लोग मानव हैं और मानवता कि यह सूझ बूझ, जिसके लिए हमें किसी महाविद्यालय, पाठशाला आदि में शिक्षा ग्रहण करने के लिए नहीं जाना पड़ता, यह तो इस प्रकार अन्तरनिहित है कि यह कार्य करती है, अपनी अभिव्यक्ति करती है। प्रकाश की तरह से अभिव्यक्त होती है। ऐसे लोगों को हम पहचान सकते हैं क्योंकि वे पूर्णतः प्रबुद्ध होते हैं। उनमें प्रकाश होता है और उस प्रकाश के माध्यम से वे पूरे विश्व को देखते हैं। ऐसा करना उनके लिए अत्यन्त पावन और सहज होता है।

स्वाभाविक रूप से हमारे अन्दर अपने बच्चों के लिए प्रेम है। अपने माता पिता के लिए भी हमारे अन्दर स्वाभाविक प्रेम है। बहुत से लोगों के लिए हमारे अन्दर प्रेम है,परन्तु जिस प्रेम के विषय में मैं आपको बता रही हूँ उस प्रेम से यह प्रेम भिन्न है। उस प्रेम का कुछ सम्बन्ध होता है,कोई अभिप्राय होता है परन्तु यह निःस्वार्थ प्रेम है। इसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। यही कारण है कि आपको अपने गुरु से प्रेम करना चाहिए उसके लिए कोई कारण नहीं है क्योंकि प्रेम तो प्रेम है। इस प्रकार से जीवन में गुरु अत्यन्त महत्वपूर्ण बन जाता है। हमारे यहां ऐसे लोग हैं जो अपने गुरु को प्रेम करते हैं और जिन्हें अपने प्रेम का पावन ज्ञान है।

प्रेम के इस पावन अवसर पर जिसमें हम उपस्थित हैं, यहां हम हृदय से एक दूसरे का आनन्द प्राप्त करने के लिए हैं। इस प्रेम का सागर हमारे अन्दर है, इस सागर में हमें स्वयं को डुबोना मात्र है। इस प्रेम–सागर में यदि हम खो गए तो न तो हमें कोई समस्या होगी और न ही कोई प्रश्न रह जाएगा। हर चीज हमारी अपनी होगी, बिना किसी वाद–विवाद के, बिना किसी प्रश्न के हम सारी व्यवस्था कर सकेंगे। यही 'सहज' होना है।

सहज तरीके से आपमें यदि यह प्रेम है......... अद्वितीय ढंग से लोगों तक पहुँचने वाला हृदय का वह प्रेम कहाँ है। उस चीज को आप अपनी सम्पत्ति नहीं बना सकते। उसके लिए आप कोई दावा नहीं

कर सकते। यह तो है और कार्य करती है। स्वतः यह कार्य करती है। हमनें यही जानना है कि हम वही प्रेम हैं। वही प्रेम हमारे अंतःस्थित है। इसका ज्ञान हमें प्राप्त करना है। इस बात का हमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना है कि हम बादशाह हैं। इससे हमारी समस्या का समाधान हो जाएगा क्योंकि इससे आप हर चीज की व्याख्या कर सकते हैं, अपने आचरण की, अपनी असफलताओं की और शेष हर चीज की व्याख्या आप कर सकेंगे यदि आपमें उस प्रेम का वरदान है।

गुरु भी यही है, आपके अंतःस्थित प्रेम, जो दूसरों के साथ यह प्रेम बांटना चाहता है, दूसरों को यह प्रेम देना चाहता है। यह ऐसा ही है–प्रेम एवं आनन्द।

प्रेम के विषय में मैं लगातार बोल सकती हूँ। परन्तु अपने अन्दर महसूस करना ही सबसे बड़ा कार्य है। पानी की तरह से आप यदि प्यासे हैं तो हम आपको जल दे सकते हैं, परन्तु आपकी प्यास बुझाने के लिए हम पानी पी तो नहीं सकते। आप ही को जल पीना होगा, आप ही को उसका स्वाद महसूस करना होगा, उसकी भावना को महसूस करना होगा कि यह क्या करता है। यह सब एक साथ है, अलग नहीं है।

मेरे विचार से यह विषय आपके लिए बहुत अधिक सूक्ष्म नहीं था। आप सब उस प्रेम को एक सीमा तक तो समझ ही चुके हैं। मुझे आशा है कि यह प्रेम बढ़ेगा, आप लोग इसमें उतरें, आप सभी, और इसका आनन्द उठाएगें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

शास्त्रों में 'ॐ' की व्याख्या

सहजयोगी जानते हैं कि विश्व के सभी धर्मों का लक्ष्य जीव और आत्मा तथा आत्मा और परमात्मा का मिलन है। यह साधक का अपनी आत्मा से एकरूप होना है,आत्मा का परमात्मा में लीन हो जाना है। परमात्मा के स्नेहमय प्रेम के खेल को वह मुरली की तरह से साक्षी भाव से देखते हैं।

सहस्रार में स्थापित होने पर जब कुण्डलिनी का मिलन अनहद् चक्र स्थित आत्मा से होता है तो मानवीय चेतना सर्वोच्च धर्म को महसूस करती है। यह आत्मा और शक्ति (परमात्मा तथा पावन आत्मा) के सामंजस्य की अवस्था है। यह अवस्था अव्यक्त परमात्मा (परब्रह्म, परमात्मा, ब्रह्मा) तथा मानव के अंतःस्थित परमात्मा (आत्मा) के बीच योग को भी व्यक्त करती है, क्योंकि यह मूल अन्तर से पूर्व आने वाली योग की अवस्था को प्रतिबिम्बित करती है(सर्वशक्तिमान) परमात्मा और पावन आत्मा (HOLY SPIRIT) सदाशिव और आदिशक्ति में मूलतः दिखाई पड़ने वाला अन्तर स्पष्ट हो जाता है।

इस योग (UNITY) की अभिव्यक्ति ब्रह्म तत्व, ॐ और आमीन में प्रकट होती है जो भगवान जीसस क्राइस्ट, परमात्मा के पुत्र, महाविष्णु (Lord Jesus the Christ, the Son of God, Maha Vishnu) के रूप में अवतरित हुए। आइए देखते हैं कि प्राचीन युगों में इसके विषय में क्या कहा गया :

"सर्वप्रथम शब्द था, शब्द परमात्मा के पास था, शब्द ही परमात्मा था। इस प्रकार परमात्मा ने शुरुआत की, सभी कुछ उनके द्वारा बनाया गया।

कोई भी सृजित चीज उनके अतिरिक्त किसी ने नहीं बनाई। उन्हीं में जीवन था और जीवन ही मानव का प्रकाश था.......। मानव मात्र को ज्योतिर्मय करने वाला सच्चा प्रकाश विश्व में आ रहा था। परमात्मा संसार में थे और संसार उन्हीं के द्वारा बनाया गया था, फिर भी विश्व उन्हें (परमात्मा) पहचानता नहीं था।"

(John I)

"जिस लक्ष्य के विषय में वेदों ने घोषणा की है,जो सभी तपस्याओं में निहित है और जिसको प्राप्त करने के लिए मनुष्य ब्रह्मचर्य और सेवा के जीवन व्यतीत करता है, उसके, विषय में संक्षिप्त में बताऊंगा। यह ॐ है।"

"अक्षर ॐ नश्वर है और वही ब्रह्माण्ड है। जिस भी चीज का अस्तित्व रहा, जो अस्तित्व में है और जिसका आज के बाद भी अस्तित्व रहेगा वह ॐ है। भूत, भविष्य और वर्तमान से भी परे अगर कुछ है तो वह भी ॐ है। बाहर जो भी कुछ हम देखते है वह ब्रह्मा है। हमारे अंतः स्थित आत्मा भी ब्रह्मा है, यह आत्मा ॐ से एकरूप है।"

(मन्दोक्यउपनिषद)

"आमीन (Amen) शब्द के अक्षर शुभचिन्तक, सच्चे, साक्षी परमात्मा की सृष्टि के आरम्भ है।"

लाओडीसी (Laodicea) के चर्च के देवदूत को लिखे।

(John. The Apocaly pse 3.14)

ईसाइयत और ॐ शब्द का सम्बन्ध सहज कुण्डलिनी योग से जोड़ कर हम पावन अक्षरों में निहित प्रतीकवाद को अनावरित कर सकते हैः–

अक्षर "A" विराट के, आदि पुरुष के तमोगुण का प्रतिनिधित्व करता है(उनके इच्छा भाव का)। ब्रहमाण्डीय स्तर पर महाकाली ईश्वर की शक्ति है लघु ब्रह्माण्डीय स्तर पर यह ईडा नाडी है और बाईं अनुकम्पी नाड़ी प्रणाली (Left Sympathetic Nervous System)। सूक्ष्म स्तर पर यह अणु का नाभिक (nucleus)है।

अक्षर "U" आदि पुरुष के रजो गुण को व्यक्त करता है (कार्यशीलता– activating mood)

ब्रह्माण्डीय स्तर पर यह हिरण्यगर्भ है जिसकी शक्ति महासरस्वती है। लघु ब्रह्माण्डीय स्तर पर यह पिंगला नाडी है तथा दाईं अनुकम्पी नाडी प्रणाली (Right Sympathetic nervous System) तथा सूक्ष्म स्तर पर यह अणु का विद्युतअणु है।

अक्षर "M" आदि पुरुष के सत्व गुण को अभिव्यक्त करता है (प्रकटन भाव–Revelation Mood) जो ॐ को साक्षात् आदिपुरुष, विराट का रूप प्रदान करता है, जिसकी शक्ति महालक्ष्मी है) लघु ब्रह्माण्डीय स्तर पर यह सुषम्ना है अर्थात् पराअनुकम्पी नाड़ी प्रणाली (Para Sympathetic Nervous System) तथा सूक्ष्म स्तर पर यह अणु की कर्षण शक्ति (Valency) है।

आदि कुण्डलिनी (आदि कुण्डलिनी के रूप में आदि शक्ति–(HOLY SPIRIT)त्रिगुणात्मिका कहलाती है, जिनमें तीनो गुण हैं। वे "A", "U" और "M" को एकरूप करती हैं। अतः परमेश्वरी शक्ति के स्तर पर आदि कुण्डलिनी ॐ का सृजन करती हैं। प्रतीकात्मक रूप में इसका अर्थ यह है कि आदिशक्ति ही परमात्मा के पुत्र (Son of God) की माँ हैं।

ॐ एक ध्वनि है और यह प्रतीक वास्तव में ऊर्जा की आदि गति–विधि का प्रतीक है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् चैतन्य रूप में इसकी अभिव्यकित को पराअनुकम्पी प्रणाली नाड़ी तंत्र के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। यह शक्ति सर्वत्र और हर समय कार्यरत् है परन्तु आत्म–साक्षात्कार से पूर्व मनुष्य इसे महसूस नहीं कर सकता।

उपनिषद हमें बताते है कि," ॐ ही ब्रह्म है। ॐ ही सभी कुछ है।" अब यह प्रश्न उठता है कि ॐ पर ध्यान किस प्रकार किया जाए? श्रीमाताजी ने इसका उत्तर सहजयोग के माध्यम से दिया है। मानव ॐ किस प्रकार बनता है?

अक्षर "A", "U" और "M" को एक रूप करके। "A", "U" और "M" को वास्तव में एकरूप कौन करता है? जो कुण्डलिनी की जागृति प्राप्त कर लेता है।

कुण्डलिनी स्वयं को किस प्रकार अभिव्यक्त करती है? सहजयोग के माध्यम से।

आदि शक्ति के रूप में सर्वशक्तिमान पावनी माँ ने ॐ का सृजन किया, श्री गौरी के रूप में उन्होंनें श्री गणेश का सृजन किया, श्री पार्वती के रूप में उन्होंने श्री कार्तिकेय का सृजन किया, श्री राधा के रूप में उन्होंने श्री महाविष्णु का सृजन किया जो श्री ज़ीज़स के रूप में माँ मैरी की कोख से अवतरित हुए तथा परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी के रूप में उन्होंने सहजयोगियों की एक प्रजाति का सृजन किया।

श्री माताजी कहती हैं कि "परमात्मा के महान् पुत्र (Great Son of God) के रूप में ही सहज योगियों का सृजन किया गया है।"

शपथ (युवा शक्ति की)

हम शपथ लेते है कि ध्यान धारणा करते हुए श्री गणेश की पूजा द्वारा, उनसे सुरक्षा की याचना करके तथा अपने मूलाधार में स्थापित होने का निमन्त्रण उन्हें देते हुए हम अपनी अबोधिता की समाज के अनन्त प्रलोभनों से रक्षा करेंगे।

हम शपथ लेते हैं कि हमारे चित्त में आत्मा के प्रकाश को ज्योतित होने से रोकने वाली संसारिक बाधाओ से मुक्ति प्राप्त करेंगे।

जिस प्रकार श्रीमाताजी ने कबेला में सहस्रार पूजा वर्ष 2000 के समय युवा–शक्ति से कहा था कि विचक्षण चित्त विकसित करें ताकि यह हमारे अंतस में दिव्य शक्ति का वाहक (Vector) बने और हमारे सम्मुख मुँहबाए खड़ी विश्व की समस्याओं का समाधान कर सकें। हम ऐसा करने की शपथ लेते हैं।

हम शपथ लेते हैं कि सहज योग के विषय पर बात करने की और विनम्रता–पूर्वक आत्मसाक्षात्कार देने के किसी भी अवसर को छोड़ेगें नहीं।

हम शपथ लेते हैं कि हम स्वयं के गुरु बनेंगे ताकि हमारे मुख से निकले शब्द आत्मसाक्षात्कारी गुरुओं के विश्वास से गूँजे और साधकों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने तथा विश्वनिर्मला धर्म में स्वतंत्र जीवन अपनाने की प्रेरणा दें।

हम शपथ लेते हैं कि अपने अंतःनिहित भय का सामना करेंगे, श्रीमाताजी से स्वंय का सामना करने तथा सहजयोग प्रसार करने के साहस की याचना करेंगे।

हम शपथ लेते हैं कि हम अपना अधिक से अधिक समय युवा शक्ति के भाई–बहनों के साथ बिताएंगे, उनसे परमेश्वरी ज्ञान का आदान–प्रदान करेंगे और यदि आवश्यकता हुई तो उनकी रक्षा करेंगे।

हम शपथ लेते हैं कि अपने अहँ और प्रतिअहँ पर काबू पाने के लिए तथा पूर्ण विश्वास बनाए रखने के लिए हम समर्पित होंगे।

हम शपथ लेते हैं कि पूर्ण समर्पित, विनम्र निष्ठापूर्वक हम अपनी परमेश्वरी माँ से प्रार्थना करेंगे कि वे हमें अपनी वास्तविकता की पहचान प्रदान करें तथा हमें आर्शीवाद दें कि इस नव वर्ष मे अपनी शपथ को पूर्ण करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं दुर्बलताओं पर हम विजय प्राप्त कर सकें। हमें आशा है कि नव वर्ष में एक नई शक्तिशाली युवा शक्ति सेना के उदभव का आरम्भ होगा, ऐसी युवा शक्ति के उदभव का जो अपने बच्चों के रूप में चुनने के लिए परमेश्वरी माँ के प्रति ह्रदय से अनुगृहीत हो।

संगीत अकादमी का शुभारम्भ

वैतरणा (भारत)–01.01.2003

(परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन)

हिन्दी रूपान्तर

मुझे खेद है कि मुझे हिन्दी भाषा में बोलना पड़ा क्योंकि मेरे पिताजी के विषय में किसी अन्य भाषा में बोल पाना अत्यन्त कठिन है, यद्यपि वे स्वयं अंग्रेजी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे और अंग्रेजी में बहुत कुछ पढ़ा करते थे। उनका अपना एक पुस्तकालय था,मैने भी वहीं अंग्रेजी सीखी थी क्योंकि मेरा शिक्षा का माध्यम तो मराठी था। हिन्दी और अंग्रजी भाषा का मैनें कभी अध्ययन नहीं किया। क्योंकि मुझे पढ़ने का शौक था और पिताजी के पुस्तकालय के कारण जो थोड़ी बहुत हिन्दी और अंग्रेजी भाषा मुझे आती है, मैनें सीखी। अब लोग कहते हैं कि मैं बहुत अच्छी हिन्दी और अंग्रेजी बोलती हूँ। इस पर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि मेरे लिए तो ये दोनों विदेशी भाषाएं थी।

मैट्रिक की परीक्षा भी जब मैनें पास की तो मेरे पास एक छोटी सी पुस्तक अंग्रेजी की थी और माध्यमिक विज्ञान (Inter Science) में भी एक छोटी सी पुस्तक मेरे पास थी। चिकित्सा महाविद्यालय में तो भाषा का कोई प्रश्न ही न था, परन्तु मैं बहुत कुछ पढ़ा करती थी। अतः मैं आप सब लोगों को भी राय दूंगी कि खूब पढ़ा करो। परन्तु मूर्खतापूर्ण पुस्तक न पढ़ कर अच्छी सुप्रसिद्ध पुस्तकों को पढ़ें। इसी प्रकार से मैनें भाषा ज्ञान विकसित किया, इसमें कुशलता पाई।

पुस्तकों को पढ़ करके मैं यह जान पाई कि मानवीय असफलताओं का क्या कारण है। मैं नहीं जानती थी कि मनुष्यों में ये कमियाँ थीं, इनका मुझे ज्ञान न था, मैं तो इन सब चीजों से परे थी। पुस्तकें पढ़ने के बाद ही मैं यह जान पाई कि मनुष्यों में कुछ कमियाँ भी हैं, हो सकता है इनका कारण उनका अहँ या कुप्रशिक्षण रहा हो। यह कुप्रशिक्षण माँ या पिता या परिवार से भी मिल सकता है। तो इस प्रकार मैनें मानव को वैसे समझा जैसे वो आज है। सहजयोग में आने के पश्चात्, शनैः–शनैः सर्वत्र मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिली, भारत में भी और बाहर भी। परन्तु उनमें से 99% लोगों में सुधार हुआ। अभी तक भी 1% लोग वैसे ही लटक रहे हैं।

मानव की सबसे बड़ी समस्या उसका अहँ है। आपमें यदि अहँ है तो आपका कुछ नहीं किया जा सकता क्योंकि ऐसा व्यक्ति सोचता है कि, "मैने कुछ महान् कार्य किया है जिसके कारण मुझमें यह अहँ है।" ऐसे लोग किसी की सराहना नहीं कर सकते, प्रेम की तो बात ही बहुत दूर है। अहँ का अर्थ यह है कि आप केवल स्वयं से प्रेम करते हैं और अपना कोई अंत आप नहीं देखते। भारत में यह भरा हुआ है, विदेशों में भी मैनें बहुत अहँ देखा परन्तु वो लोग कम से कम इतना तो जानते हैं कि अहँ है और इसका सामना करना है। परन्तु इस देश में मैं समझ नहीं पाती, लोग ऐसे कार्य करते हैं जिनसे उनमें अहँ विकसित होता है, फिर भी वह सोचते हैं कि वो बिल्कुल ठीक हैं।

सभी देशों की अपनी–अपनी समस्याएं हैं, परन्तु हमारे पास एक महानतम् उपलब्धि है और वो है हमारा संगीत। संगीतकार नहीं संगीत। अतः संगीतकारों को चाहिए कि सहजयोग अपनाएं। उन्हें चाहिए कि ध्यान–धारण करें। कोई संगीतज्ञ यदि धन लोलुप है तो आप कुछ नहीं कर सकते। उसे या तो संगीत लोलुप होना चाहिए या ध्यान लोलुप। ऐसे लोग जो धन लोलुप होते हैं वो कभी अपना मूल्य नहीं समझ सकते। क्योंकि यदि आपके पास संगीत है,संगीत की प्रतिभा है तो फिर क्यों

आपको पैसे की चिन्ता होनी चाहिए? चाहे जितना पैसा आप उन्हें दे दें, वे कभी सन्तुष्ट नहीं होते। मैंने ऐसे बहुत से महान संगीतज्ञ देखे हैं जिन्हें न तो कभी धन की लालसा थी और न ही सत्ता की। परन्तु आज भी हमारे यहां ऐसे संगीतकार हैं जो धुरन्धर हैं फिर भी अत्यन्त विनम्र हैं, वो सदैव यही कहेंगे, "हमें अभी बहुत कुछ सीखना है, बहुत कुछ समझना है।"

अतः बाबा मामा तथा अपने पिता की मूर्ति को यहां देख कर मैं अत्यन्त द्रवीभूत एवं प्रभावित हुई। इसलिए नहीं कि वे मेरे भाई या पिता थे परन्तु इसलिए कि वे अत्यन्त–अत्यन्त महान् मानव थे और उनकी महानता ने मेरे हृदय को छू लिया । बाबा में यह गुण था कि वह अत्यन्त प्रेममय और क्षमाशील व्यक्ति था। अत्यन्त विनम्र एवं प्रेममय।शोहरत की उसने कभी चिन्ता नहीं की और न ही उसने कभी यह सोचा कि वह कौन से पद पर है। उसका विनम्र स्वभाव अत्यन्त स्वाभाविक और अत्यन्त मधुर था। बचपन से ही वह मेरे साथ रहा इसलिए मैं उसे पहचान सकी। उसके मन में किसी के प्रति दुर्भावना न थी, न ही उसने किसी को नीचा दिखाना चाहा, हमेशा उसने शून्य बिन्दु पर रहना चाहा। कोई यदि मुझे सताता तो वे अपनी पटुता से उसे कहीं अन्यत्र भेज देते,वह बहुत चतुर था। उसने यह समझ लिया था कि इन धूर्तों को काबू करना मेरे वश कि बात नहीं है, अतः वह अत्यन्त चतुराई से इनसे निपटता था और यह बात निश्चित कर लेता था कि ऐसे लोग इधर–उधर हो जाएं। वह जानता था कि दिखावा करने वाले लोग कौन हैं और उनके बारे में मुझे बताया करता था: "यह व्यक्ति अत्यन्त दिखावेबाज है,ये दूसरों पर रौब जमाने का प्रयत्न करेगा जबकि ये कुछ भी नहीं जानते।" कविता उनके हृदय का सर्वोत्तम गुण था, वे सुन्दर कविताएँ लिखा करता थे।

आरम्भ में वह बहुत निकम्मा था, स्कूल के लिए उसके प्रस्ताव (Essays)मैं लिखा करती थी। अध्यापक उससे कहते, "इतने अच्छे प्रस्ताव क्या तुम लिख सकते हो?" परन्तु उसने अध्यापकों को कभी नहीं बताया कि उसके प्रस्ताव मैं लिखा करती थी। परन्तु अचानक उसमें भाषाएं सीखने की इच्छा जागृत हुई–मराठी, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी। आश्चर्य की बात थी कि गणित का उसे बड़ा अच्छा ज्ञान था क्योंकि मेरी माँ भी गणितज्ञ थी, परन्तु अचानक उसने भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया! वह इतना कुशल था कि मैं अपनी कविताएं ठीक करने के लिए उसे दिया करती थी। उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी और मराठी भाषा के शब्दों का उसे अच्छा ज्ञान था। वह मुझे बताया करता था कि, "मराठी भाषा बहुत अच्छी है, किसी की गलतियाँ यदि आपने खोजनी हैं तो मराठी सर्वोत्तम है, इसके माध्यम से आप उसे उन गलतियों के बारे में बता सकते हैं।" उसने मुझे मराठी के बहुत से दिलचस्प शब्द भी बताए, मैंने कहा, "बाबा तुमने मराठी कब पढ़ी?" उसने कहा "अभी मुझे इसका पता लगा है।"

तो उसका सारा ज्ञान अन्तरजात था और उसके स्वभाव के कारण सभी लोग उससे प्रेम करते थे। कभी उसने दिखावा करने की कोशिश नहीं की,कभी नहीं। अत्यन्त सहज व्यक्ति, अत्यन्त सहज आदतें, उसने सदा लोगों को समझाने की कोशिश की कि वे किस प्रकार का जीवन व्यतीत करें। बिना उन्हें बताए, मैं नहीं जानती कि किस प्रकार वह ये सब कुछ कर पाया।

अतः उसके प्रेम और लगन के कारण हमारे पास अब बहुत से संगीतज्ञ हैं, बहुत से लोग हैं। सहज योग के लिए बाबा ने और मेरे पिताजी ने जो कार्य किया उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

परमात्मा आपको धन्य करें।

दिवाली पूजा

लॉस एंजलिस, 9 नवम्बर, 2003

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन

आपके हृदयों का प्रकाश जब सामूहिक रूप से निकलता है तो विश्व के उचित दिशा में चलने के लिए महान् प्रकाश का सृजन करता है। आज महान् आनन्द का दिन है,जो भी लोग इसमें भाग लेगें वो भी इस महान आनन्द को फैला रहे हैं। परन्तु समस्याएं भी हैं, जैसे सब लोग कहते हैं,परन्तु हमारे लिए कोई समस्या नहीं है क्योंकि हमारे सम्मुख अंधेरा बिल्कुल नहीं हैं,कहीं भी हम अंधेरा नही देखते,हम केवल प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश देखते हैं। फिर किस चीज की कमी है? कमी है हमारी सच्चाई की। हमें स्वयं के प्रति निष्कपट होना है क्योंकि, हमारा प्रेम एवं आनन्द उधार लिया हुआ नहीं है। इसका उद्‌गम स्रोत से है और यह बह रहा है, बह रहा है,बह रहा है। अतः उसको जागृत किया जाना आवश्यक है ताकि वह प्रेम बहता रहे और ईर्ष्या, प्रतिद्वंद भाव आदि हमारे तुच्छ दुर्गुण इस प्रेम के प्रवाह में बह जाएं। यह दुर्गुण बह सकते हैं यदि आपका हृदय प्रेम से परिपूर्ण हो। आज प्रेम के उस प्रकाश को फैलाने का दिन है ताकि हर मनुष्य प्रकाश एवं प्रेम को महसूस कर सके और अपनी छोटी–छोटी समस्याओं को भूल सकें।

मुझे प्रसन्नता है कि आप लोगों को कोई सभागार मिल सका। सौभाग्य से हमें यह प्राप्त हुआ है, इसके विषय में लोग बहुत चिंतित थे।यह तो घटित हो ही गया है। अतः आपको यह बात भी समझनी चाहिए कि हमारे भाग्य का भी पथ–प्रदर्शन एवं देखभाल हो रहा है। आप आशीर्वादित लोग हैं, इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। हमें छोटी–छोटी चीजों और तुच्छ मामलों के विषय में चितित नही होना चाहिए। आप देखेंगे की सभी कुछ भली भांति कार्यन्वित होगा, यदि आप इसे अपनी नियति के भरोसे छोड़ देंगें।आपकी नियति अत्यंत उच्च एवं अत्यन्त महान् है। अपनी नियति के साथ आप बहुत आगे बढ़ेगें।

दिवाली पर आज आप सबसे यह वचन है कि आप जीवन के उच्चतम् एवं श्रेष्ठतम् मार्ग पर पहुँचेंगे। मेरा कहा हुआ एक–एक शब्द यह प्रमाणित करने के लिए सत्य होगा कि जो भी मैं कहती हूँ वह घटित होता है। आपकी जो भी छोटी–छोटी समस्याएं हैं सभी समाप्त हो जाएगीं। यह परमेश्वरी के सन्देश हैं, आपको तुच्छ चीजों के लिए, धन के लिए,नौकरियों के लिए चिंतित नहीं होना। यह आपका कार्य नहीं है। आपकी नियति इसे कार्यन्वित करेगी। आपको वचन दिया जाता है कि आपकी देखभाल की जाएगी। मुझे आशा है कि आप इस वचन पर विश्वास करेंगे और पूरी तरह से आनन्द मग्न हो जाएगें।

हृदय से मैं आप सबको अत्यन्त प्रसन्नता एव स्मृद्धिमय दिवाली का आशीर्वाद देती हूँ।

आपका हार्दिक धन्यवाद

परम पूज्य श्रीमाताजी का सहजयोगियों को आदेश

(सहज योग सभी शारीरिक एवं अन्य विकारों को दूर करता है)

चक्रों के विषय में हमेशा सावधान रहना अत्यन्त आवश्यक है। सदैव चक्रों को बाह्य बाधाओं और पकड़ से मुक्त रखना चाहिए। नमक डले पानी में नियमित रूप से पैर डाल कर बैठना इसके लिए अत्यन्त लाभदायक है। शारीरिक तथा मानसिक विकार उत्पन्न करने वाली बाधाएं प्रायः आँखों और भोजन के माध्यम से प्रवेश करती हैं। इन चीजों पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है। चक्र जब खुलते हैं तो उन पर विराजमान देवी–देवता जागृत हो जाते हैं तथा सहज–योगियों की सहायता करते हैं। रात को सोने से पूर्व बन्धन लेना भी बाधाओं से रक्षा करता है।

भक्त सदैव देवता को प्रसन्न रखना चाहता है। हमारी माँ इतनी दयालु हैं कि वे अपने बच्चों को प्रसन्न देखने मात्र से तथा सहज–योग में उन्हें बढ़ता हुआ देख कर ही प्रसन्न हो जाती हैं। सहज–योगियों की समस्याओं को दूर करने के लिए वे भिन्न स्थानों और देशों में जा–जा कर उनसे मिलती हैं। सहज–योगियों को भी चाहिए कि वे उतने ही संवेदनशील बनें और जब–जब भी श्रीमाताजी उनसे मिलती हैं वह उन्हें अपनी उन्नति दिखाएं। हर समय अपनी समस्याएं ही न बताते रहें। निःसन्देह उनके आदेशों के अनुसार चल कर ही सहजयोगी विश्व के सबसे आनन्दित लोग हो सकेंगे।

माँ के लिए प्रेम का अहसास होना स्वाभाविक है। उनका मौन इस प्रेम की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है,क्योंकि वे हृदय के सूक्ष्माति–सूक्ष्म भाव को भी समझती हैं। बिना आज्ञा के उनके चरण–स्पर्श करने के लिए भाग कर आगे जाना या उनका ध्यानकर्षण करने का प्रयत्न करना, बिना कहे बोलना तथा उनके निवास पर जा कर उनसे मिलना, हृदय की प्रेम अभिव्यक्ति के अवांछित तरीके हैं। हमारी परमेश्वरी माँ पावनता का सार–तत्व हैं। उनके चरण–स्पर्श करके लोगों को महान् प्रसन्नता मिलती है। परन्तु लोगों की अंतःस्थित बाधाओं के कारण माँ को कष्ट हो सकता है।

भारत में बुजुर्गों की चरण सेवा करने की रीति है और बडे इसके बदले में आशीर्वाद देते हैं। यही भावना माँ के प्रति भी दिखाई जाती है जबकि वे अन्य लोगों से बिल्कुल भिन्न हैं और उन्हें इसकी कोई आवश्यकता नहीं। किसी को चरण सेवा के लिए यदि वह कहती हैं तो इसलिए कि उस व्यक्ति के चक्रों को स्वच्छ कर सकें, अपने व्यक्तिगत आनन्द के लिए वे ऐसा नहीं करतीं। अतः सभी को यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिए कि उनकी आज्ञा के बिना उनके चरण–कमलों को स्पर्श नहीं करना है।

जब हम नए साधकों के बीच में होते हैं,जिन्हें अभी आत्मसाक्षात्कार नहीं मिला,तो हमें चाहिए कि अपने चक्रों को स्वच्छ करने के लिए, कुण्डलिनी उठाने के लिए, बन्धन लेने के लिए, सन्तुलन प्राप्ति के लिए, बायां–दायां उठाने के लिए, प्रतीकात्मक रूप से हिलाए जाने वाले, हाथों का उपयोग न करें। यह सारा कार्य चित्त से भी उतनी ही अच्छी तरह से किया जा सकता है। श्रीमाताजी साक्षात् में जब किसी सभागार या जन कार्यक्रम के स्थान पर पहुँचें तो भाग–भाग कर द्वार पर इकट्ठे होने का कोई लाभ नहीं। सभी लोगों को चाहिए कि उनके आने से पूर्व अपने स्थान ग्रहण कर लें और सभागार में उनके प्रवेश करते ही सम्मानपूर्वक खडे होकर, हाथ जोड़कर उनका स्वागत करें। माला पहनाने से पूर्व उनकी आज्ञा ली जानी आवश्यक है। अपने आगमन के पश्चात् जब वे कुशल क्षेम पूछती हैं तो प्रायः इस बात की आज्ञा देती हैं। यदि कोई समस्या हो तो इस समय संक्षिप्त रूप में उसके बारे

में बताया जा सकता है और यदि तुरन्त वे समस्या का समाधान नहीं सुझातीं तो इस पर बल नहीं दिया जाना चाहिए। उनका मौन इस बात की ओर इशारा करता है कि उन्होंने समस्या को सुन लिया है और शीघ्र ही उसका कोई–न–कोई समाधान निकल आएगा।

उनकी विनम्रता, सुगमता से उन तक पहुँच पाना, सभी के साथ उनका सम्मानमय व्यवहार लोग गलत समझ बैठते हैं। उनकी उपस्थिति में सभी मान–मर्यादाओं और आचार संहिता का पालन किया जाना तथा उनके प्रति विनम्र, सम्मानमय, सावधान तथा संवेदनशील होना अत्यन्त आवश्यक है। सभी देवी देवता हमेशा उनकी सेवा में उपस्थित होते हैं और उनके प्रति जरा सा भी अनादर वे बर्दाश्त नहीं करते। उनकी उपस्थिति में अपनी विनम्रता एवं प्रेम के कारण देवी देवता कुछ सीमा तक अपने क्रोध को रोकते हैं। परन्तु एक सीमा से आगे वे गतिशील हो उठते हैं। ऐसी स्थिति में सजा से बचा नहीं जा सकता। ज्योंही वे सभागार में प्रवेश करती हैं तो सभी प्रकार की व्यक्तिगत बातचीत रोक दी जानी चाहिए और उनकी उपस्थिति में ये बातें बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। उनके प्रवचन के दौरान किसी भी प्रकार की गडबडी नहीं होनी चाहिए। उन्हें किसी भी प्रकार की व्याख्या, सुझाव या टिपण्णी की जरूरत नहीं होती।

समर्पण के बिना श्रद्धा नहीं हो सकती। समर्पण के मार्ग में अहम् और प्रतिअहम् दो बाधाएं हैं। एक पश्चिमी सहजयोगी ने बडी सच्चाई पूर्वक कहा है," मैं अपने अहम् को देखता हूँ और मुस्कराता हूँ। मुझे अपने आप से दूर रखने के लिए तुम कौन कौन सी चालाकियां नहीं करोगे?" अहम् और प्रतिअहम् को श्री माताजी के श्री चरणों में समर्पित करना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम है। समर्पण का अर्थ है यह स्वीकार करना कि श्रीमाताजी सर्वोपरि हैं तथा इस ब्रह्माण्ड की सृजनकर्ता। वो जानती हैं कि हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है और उनके मुँह से निकले हुए शब्द प्रणव की अभिव्यक्ति हैं। समर्पण का अर्थ है अपने पूर्वानुभवों, गुरुओं तथा किताबी ज्ञान को भूल जाना तथा निष्ठा पूर्वक उनकी शिक्षाओं को अपना लेना। सभी समस्याओं को अहम् के माध्यम से सुलझाने के स्थान पर श्री माता जी पर छोड देना ही समर्पण है। समर्पण की सबसे सहज विधि श्री माता जी की जीवन शैली और उनके गुणों का अनुकरण करना है।

प्रलोभन,उत्तेजना,तनाव या निराशा के क्षणों में व्यक्ति हमेशा अपने से प्रश्न कर सकता है," क्या श्रीमाताजी भी ऐसे ही आचरण करतीं जैसे मैं कर रहा हूँ?" उन्हें याद रखते हुए और ये सोचते हुए की इन परिस्थितियों में वो क्या करतीं, नकारात्मक शक्तियों को दूर रखने में हमारी पथ–प्रदर्शक–शक्ति तथा हमारा सम्बल होनी चाहिए।

द्विज बने लोगों के लिए अहम् और प्रति अहम् से एक जुट उनकी नकारत्मकता से निरन्तर संघर्ष आवश्यक है। नकारत्मकता जन्मजात भी हो सकती है, जो पूर्वजन्मों के कर्मफल के परिणाम स्वरूप सूक्ष्म रूप से हमारे अन्तःस्थित है।

इसके साथ साथ दिनचर्या में भी हमें ब्राह्य नकारात्मकता का सामना कर पड सकता है।

अवसर प्राप्त होते ही अन्तःस्थित नकारत्मकता बाह्य नकारत्मकता से एक रूप हो जाती है। यदि इसे काबू न किया जाए तो यह श्रीमाता जी के शुभ प्रभाव को भी गौण कर देती है। अतः आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद भी आवश्यक है कि व्यक्ति न तो कुगुरुओं के पास जाए और न ही उनके साहित्य को पढे। नकारात्मक वाद विवाद तथा

नकारात्मक लोगों से दूर रहने में ही भलाई है। किसी भी मन्दिर मे प्रवेश करने से पूर्व उसकी चैतन्य लहरियाँ देखी जानी आवश्यक हैं।

परमेश्वरी माँ का स्थान हमारे हृदय में होना चाहिए। सदैव उनको स्मरण करने से या निर्विचारिता की स्थिति बनाए रखने से दुनियावी चीजों से विरक्ति का दृष्टिकोण विकसित होगा। अपने नाम को प्रतिदिन जूते मारने से अन्तःस्थित सूक्ष्म नकारात्मकता दूर हो सकती है। नकारात्मक लोगों को बन्धन देना और उनके नाम को जूते मारना (Shoe Beating) उन्हें आपसे दूर रख सकता है तथा उन्हें सुधार भी सकता है। दूसरों की गलतियों की आलोचना करना या उनकी शिकायत करने की अपेक्षा उनकी गलतियों को अनदेखा करना व्यक्ति में उदारता को बढ़ावा दे सकता है। इन गुणों को अपने अन्दर उत्पन्न करने के प्रयास सहायक हो सकते हैं। जो कुछ कहा गया है उसके अतिरिक्त श्री माताजी द्वारा बोए गए सहजयोग के बीज अंकुरित होंगे और उचित वातावरण में विशाल वृक्षों के रूप में उन्नत होंगे। श्रीमाताजी अपनी सर्वव्यापी शक्तियों द्वारा उनकी रक्षा करती है परन्तु मनुष्यों को आवश्यक वातावरण की व्यवस्था करनी होती है। व्यक्ति को दी गई चयन की स्वतन्त्रता का विवेक पूर्ण उपयोग करना होगा और श्री माता जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर निरन्तर चलते रहना होगा। सर्वशक्तिमान परमात्मा तुम्हें स्वीकार करने की प्रतिक्षा कर रहे हैं। परमात्मा तक न पहुँच पाने वाले लोगों को स्वंय को ही दोष देना होगा।

गुरु पूर्णिमा

'सहजयोग' एक अभिनव अविष्कार"

1.6.1972

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

वास्तविक जो चीज स्थित है, जो है ही उसका अविष्कार कैसे होता है? जैसे कि कोलम्बस हिन्दुस्तान खोजने के लिए चल पड़ा था तब क्या हिन्दुस्तान नहीं था? यदि नहीं होता तो खोज किस चीज की कर रहा था। सहजयोग तो है ही पहले ही से है। इसका पता सिर्फ अभी लगा है। सहजयोग, ये परम –तत्व का अपना तरीका है। यह एक ही मार्ग है, मानव जाति को उत्क्रान्ति (Evolution) के उस आयाम में, उस (Dimension) में पहुँचाने का एक तरीका है, एक व्यवस्था है, जिससे मानव उच्च–चेतना से परिचित हो जाए, उस चेतना से आत्मसात हो जाए जिसके सहारे ये सारा संसार,सारी सृष्टि और मानव का हृदय भी चल रहा है। बहुत कुछ इसके बारे में लिखा गया है, पुरातन कालों से ही खोज होती रही, मनुष्य खोज कुछ रहा ही है हर समय, चाहे वो पैसे में खोज ले, चाहे वो सत्ता में खोज ले, चाहे वो प्रेम में खोज ले, वो किसी न किसी खोज की ओर दौड रहा है। लेकिन उस खोज के पीछे में कौन सी प्यास है वो शायद वो जानता नहीं। इसके पीछे में सिर्फ आनन्द की खोज है, आनन्द की खोज में वो सोचता है कि बहुत सी गर सम्पत्ति इकट्ठा कर ले तो उस आनन्द में लय हो सकता है। लेकिन ऐसे भी देश अनेक हैं जिन्होंने सम्पत्ति में बहुत कुछ प्रगति कर ली, बहुत कुछ पा लिया है और अत्यन्त दुखी हैं। आनन्द तो दूर रहा, हजारों लोग वहाँ आत्महत्याएं कर रहे हैं! सारी खोज के पीछे में आनन्द की प्यास आपको घसीटे चली जा रही है किसी अज्ञात की ओर, सारी ही खोजों में ढूँढते–ढूँढते जब मनुष्य हार जाता है, और कहीं मिलता नहीं तो वह धर्म की ओर मुड़ता है और धर्म की ओर जब मुडता है तब भी वह बाहर ही खोजता है।

कारण यह है कि जो वो खुद है स्वयं है वो खोजता है, इसलिए अपने से मनुष्य भागता है। हर समय अपने से भागता है दो मिनट अपने साथ नहीं बैठ पाता। उसको अगर दो मिनट अपने साथ बैठने को कहो तो वो कहता है प्रभु ये क्या मेरे लिए ये सजा हो गई! जिसको आजकल कहते हैं। आदमी अपने से इतना क्यों उलझा हुआ है? सोचने की बात है कि मनुष्य अपने से इतना क्यों जोर से भागा चला जा रहा है? क्योंकि वो अपने से अपरिचित है, अपने सौन्दर्य से, अपने वैभव से, अपने ज्ञान से और अपने प्रेम से अपरिचित आनन्द की खोज बाहर की ओर करते हुए दौड रहा है। आनन्द बाहर है नहीं, यह अन्दर है, आपमें है, आप स्वयं आनन्द स्वरूप हैं। आप परमात्मा स्वरूप हैं ऐसा सब लोग कहते हैं। सिर्फ बातें करने से यह बात पूरी नहीं होने वाली है। मराठी में कहते हैं कि......। चाहे हम आपको कहें कि आप निराकार को खोजें, चाहे साकार को खोजें तो सब बातें ही बातें तो हो गई, हजारों बातें हो गई, करोड़ों किताबें लिखी गई, न जाने कितने ही जीवन बर्बाद हो गए, इन्सान की खोज का कोई अन्त नहीं! मनुष्य जो कुछ भी खोजता है अपने मनसे वो मन के दायरे में Limitations में खोजता है। मन से परे की जो बात है वो इस मन से समझने वाली है नहीं। अब जैसा मेरा भाषण है ये भी आपके लिए सिर्फ बातचीत ही है, ये भी एक बातचीत ही है क्योंकि इस बातचीत से आप उस परमात्मा को नहीं जानेंगे। जितनी भी मैं इस पर बात करती जाऊँ उतना ही आपके मन

पर इसका बोझा बढ़ता जाएगा। अगर मैं कहूं कि कोई बोझा न रखो तो उसका भी बोझा बनता जाएगा। इसी तरह की व्यवस्था परमात्मा ने हमारे अन्दर कर दी है कि मन से हम जो भी करेंगे वह बोझिल हो जाएगा और उस बोझे के नीचे हम दबे हुए उड़ नहीं सकते वहाँ पर जहाँ पर हमें जाना है। इसीलिए खोज आज तक अधूरी ही रही है।

लेकिन नव निर्माण की बात मैं आप से करने वाली हूँ ,सिर्फ बात ही नहीं इसका अविष्कार, जो खोज निकाला है। उत्क्रान्ति के मार्ग में ऐसा नहीं होता रहा है कि कोई प्राणी अति विशेष Specialization में या विशेषज्ञ हो गया तो वो गिर जाता है, वो खत्म हो जाता है, इसी तरह से मनुष्य का भी हुआ जा रहा है कि इतना ज्यादा आपस की जो विरोध और Competiton चल रही है उससे मनुष्य ने भी अपने दिमाग को इतना ज्यादा विशेषज्ञ कर लिया है कि वो फटा चला जा रहा है उसका दिमाग और एक अब नया तरह का मानव आने की जरूरत है जो मन से परे उस शक्ति को जान ले जो इस मन को भी चलाता है और इस हृदय का भी स्पन्दन करता है। उस शक्ति को जानने के बारे में कितनी भी बातें आप करिए और कितना ही इस पर प्रयत्न करें आप वहाँ तक नहीं पहुँच सकते। ये बात निःसन्देह है। ऐसे तो सभी ने यही लिखा है जो मैं कह रही हूँ। कोई भी ऐसी विशेष बात तो कह नहीं रही हूँ। नानक जी को आप पढ़ें, कबीर दास जी को आप पढ़ें, आप वशिष्ठ को पढ़ें, गुरुओं के गुरु जनक के बारे में आप पढ़ें, अपने देश में छोड़ो, बाहर के देशों में भी हजारों लोगों को जो पार हो चुके हैं हजारों वर्षों से ऐसा ही लिखते आए हैं, यही लिखते आए हैं जो मैं कह रही हूँ कि जो पाना है अकस्मात अन्दर होता है। लेकिन वो भी बेचारे कहते ही रह गए क्योंकि शायद वो भी उसे खोज नहीं पाए थे। गर कोलम्बस हिन्दुस्तान नहीं खोज पाया था तो इसका मतलब ये नहीं कि वो कुछ कम था। और बाद में जिन लोगों ने उसे खोज लिया है वो उन्होंने उसे कोई नीचे गिराने के लिए नहीं खोजा।ये सामूहिक खोज है। आप भी जब उसे अलग–अलग होकर सोचते हैं तब इस तरह से बात बहुतों के दिमाग में आती है कि माताजी कुछ अलग ही बात कह रही हैं। नहीं। मैं इन सब खोजों की खोज का ही पता आपको दे रही हूँ। आज तक अत्यन्त कष्ट उठाकर के न जाने कितने मानवों ने इस पर ध्यान दिया । Psychologists ने भी दिया, Biologists ने भी दिया, बड़े बड़े Scientists ने भी दिया। वो भी एक हद तक जाकर के हार जाते हैं। बहुत बहुत सन्त और जो महन्त हो गए, Realized हो गए और उन्होंने भी पा लिया लेकिन दे नहीं पाए। इसका कारण समय है। परमात्मा के लिए समय अनन्त है। हम लोग उसे ऐसा सोचते हैं कि जो लोग पीछे हो गए और जो लोग आगे हो गए और जो लोग मर गए जो बड़े हो गए। कौन मरा है मैं ये पूछना चाहती हूँ ? कोई मरता ही नहीं। जितने भी मरते हैं परलोक में बैठते हैं और वापिस यहाँ लौट आते हैं। प्राणी मात्र से कुछ कुछ लोग मनुष्य हो जाते हैं लेकिन अधिकतर मनुष्य परलोक से वापिस यहाँ पर और यहाँ से परलोक! यही आना जाना लगा हुआ है। कोई मरता है तो हो सकता है कि आपमें से जो आज यहाँ बैठे हुए हैं ये भी जन्म जन्मांतर की खोज लिए हुए आज यहाँ पहुँचे हुए हैं और उसको पा सकते हैं। अगर आप पा सकते हैं तो उसमें इतना वाद विवाद क्यों? एक साधारण सी बात है, मुझे बड़ी बचकाना सी लगती है, बहुत ही बचकाना सी बात है कि लोग हर एक चीज का राजकरण बना लेते हैं। एक माँ खाना खाने को दे

रही है उसका भी राजकरण बना लेते हैं, कैसे कार्य चलेगा? ये राजकरण नहीं है। ये तथ्य है, ये सत्य है। एक बहुत बड़ी खोज है। यहाँ पर जो लोग Realized लोग बैठे हैं वो समझ रहे हैं, मैं क्या कह रही हूँ। धर्म की खोज में मनुष्य परलोक ही तक पहुँच पाया है, अभी तक परम तक नहीं पहुँच पाया। और जो परम तक पहुँचे भी थे वो परम को नीचे नहीं ला सके और लोगों के लिए ये बात सत्य है। जैसे आपके अनेक जन्म हुए हैं मेरे भी अनेक जन्म हुए हैं। इन सब बड़े–बड़े खोजने वालों से मेरा भी बहुत नज़दीकी संबंध रहा है। और वो लोग जितने मेरे अपने हैं शायद आप लोगों के नहीं हैं। जो लोग बड़े–बड़े झण्डे लगाते हैं कि हम मुसलमान हैं, हिन्दु हैं, ये हैं, वो हैं, वो सिर्फ एक वकीली लेकर के झूठमूठ से आए हैं। उनके पास कोई भी guarantee नहीं है कि पिछले जन्म में हो सकता है जो हिन्दू है वो मुसलमान रहा हो, जो मुसलमान है वो इसाई रहा हो। जब जन्म जन्मांतर की बात है, जब अनन्त की बात है, तो सोचना भी उसी Level पर, उसी स्तर पर होगा। वो पर ऐसा है कि जो कुछ परम है वो जड़ नही, जो कुछ परम तत्व है वो जड नहीं। जो कुछ कठिन है वो gross नहीं, जो सूक्ष्म है वो जड़ नहीं। इस बात को आप ठीक से समझ लें। वो जड में प्रकाशित हो सकता है किन्तु परम जड में Interested नहीं है, उसमें कोई दिलचस्पी नही है। जैसे कि बहुत से लोग मुझे बताते हैं कि वे एक साधू–सन्त थे वो परमात्मा से कुछ माँग रहे थे और इनको परमात्मा ने दे दिया। दिया होगा, लेकिन परमात्मा ने नहीं दिया, ये मैं बता सकती हूँ। परमात्मा को इसमें कोई भी Interest नही है कि आपके इतने बच्चे पैदा हो जाएं या आपको ज़मीन मिल जाए, आपको घर मिल जाए, आपको दुनिया भर के ऐशो आराम मिल जाएं। उसमे परमात्मा को कोई भी Interest नहीं है।

हमने परमात्मा को समझने में ही गलती कर दी है। परम तत्व को परम ही देने में Interest है। ये बात आप लिख डालिए। और इस पर भी लोग सब बात करते हैं कि परम तत्व जो है वो कुण्डलिनीयोग से पाया जाता है, ऐसा भी बहुत लोग लिखकर के गए। लेकिन कुण्डलिनी योग से कोई सिद्धि पाई जा सकती है ऐसी बात कहीं भी लिखी नहीं गई है। जिन्होंने सिद्धियाँ पाई हैं वो नहीं लिखते कि कुण्डलिनी से सिद्धियाँ आती हैं, कभी भी नहीं। कुण्डलिनी आपकी माँ हैं, आपके अन्दर बैठी हुई हैं, आपको पुनर्जन्म देने के लिए। वो आपको सिर्फ पुनर्जन्म देंगी, आपको सिद्धियाँ देकर के परलोक में फेंकने वाली वो मूर्ख माँ नहीं हैं। जितनी समझ आपके पास है उससे कहीं अधिक समझदार है वो, कहीं अधिक प्रेममय हैं। वो आपको गलत जगह में, असत्य में ढकेलने वाली दुष्ट माँ नहीं हैं। कुण्डलिनी के योग से जब तक परमतत्व की पहचान नहीं होती है तब तक वो कुण्डलिनीयोग नहीं है। और वही सहजयोग है।

और इसकी व्यवस्था कितनी खुबसूरती से परमात्मा ने हमारे अन्दर की है, वो भी एक समझने की बात है। जब बच्चा माँ के पेट में आता है तो जड़–तत्व से उसका सारा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार वो सब बना देता है लेकिन उसके अन्दर जब प्रकाश आता है वो माथे के तालू में से जिसे कि Fontanelle Bone अंग्रेजी में कहते हैं और नीचे उतरता है और अपना Brain जिसका आकार त्रिकोणाकार एक त्रिकोण के जैसा है उसमें से यही शक्ति गुजरते वक्त तीन हिस्सों में बँट जाती है। ये सब परमात्मा ने किस खूबी से किया है ये जानने के लिए यहाँ पर कोई डॉक्टर हो तो वो समझ

सकता है। इसी को हम Sympathetic और Parasympathetic Nervous System कहते हैं। हमारे शरीर के अन्दर ही दो ऐसी शक्तियाँ विराजमान हैं कि जिसके बारे मे हम बहुत कुछ कम जानते हैं और जिसके बारे में हमें पता लगाने में बड़ी दिक्कतें होती हैं खासकर के Parasympathetic Nervous System के बारे में। अपने योग शास्त्र में इसे सुषुम्ना, ईडा और पिंगला ऐसी दो नाड़ियां बताई हैं। ईडा और पिंगला ये दोनों ही अपने शरीर में Sympathetic Nervous System का उदभव करती हैं। माने उसका जड़तत्व जो है वो Sympathetic Nervous System है। अब ऐसा समझ लें कि परमात्मा ये Petrol अपने सिर में यहाँ से भर देते हैं और Petrol भरते वक्त वो कुछ ऐसी घटना घटित होती है कि प्रिज्म के अन्दर से गुजरने वाले उनके किरण आपस में इस तरह से आकर के और फिर मुड़ जाते हैं, जिसे Reflect होना कहते हैं। और फिर नीचे जाकर के उनकी ईडा और पिंगला, ऐसी दो नाड़ियाँ बनती हैं और जो बराबर बीचों बीच शिखर पर से, बीचों बीच उतरने वाले किरण, आपकी कुण्डलिनी बन करके जो त्रिकोणाकार अस्थि, अपने मज्जा तन्तुओं के नीचे बना हुआ है, उसमें वास करती है। इससे एक बात तो जाहिर हो गई कि हमारी कुण्डलिनी जो है वो ऐसी जगह बैठी हुई है जिसका सम्बन्ध सेक्स से कुछ नहीं है। अब आप गर किताबें पढ़े तो कुण्डलिनी शास्त्र पे तो आप सब जान जाइएगा कि ऐसा होता है, वैसा होता है, ये है, वो है। लेकिन कुण्डलिनी को उठाने वाले, वो बहुत कुछ मुझे भी मिले हैं और मैनें भी जाने हैं वो सब Sympathetic से आपको ले जाते हैं, सुषुम्ना से उठाते नहीं हैं। उसकी एक पहचान है, आप में से गर कोई Doctor होगा तो समझ लेगा इस बात को जो मैं कह रही हूँ, कि सारा Sympathetic Nervous System सुषुम्ना नाड़ी है जो कि बीचों–बीच है और उसकी पहचान एक है कि जब कुण्डलिनी उठती है तो आँख की पुतलियाँ बड़ी हो जानी चाहिएं। ये तो साधारण बाहर की पहचान है किसी भी "doctor" से आप पूछ लें कि जब para sympathetic nervous system activate होती है तो पुतलियाँ "dilate" होनी चाहिएं। और बाहर भी हम आपको दिखा सकते हैं अगर आपकी नजर खुली हुई हो तो क्योंकि आपको तो हर एक चीज का कोई न कोई proof ही देना पड़ता है नहीं तो कुछ समझ में नहीं आती बातें। इसका भी एक proof है कि गर आप हमारे किसी कार्यक्रम में आएं तो आज ही आपको दिखा देंगे। कुण्डलिनी का स्पन्दन भी आप देख सकते हैं। आप जानते हैं कि सबसे पहले त्रिकोणाकार अस्थि पर कभी भी कोई स्पन्दन होता नहीं। वो हम दिखा सकते हैं आप गर देखें कि त्रिकोणाकार अस्थि में स्पन्दन होता है, फिर धीरे धीरे स्पन्दन ऊपर की ओर उठता है और इसके साथ–साथ बीच–बीच में किसी–किसी जगह ज्यादा स्पन्दित होता है। वही अपने केन्द्र हैं। ये आपको दिखाया जा सकता है और इसको आप देख सकते हैं और उसकी प्रचीति देख सकते हैं। जब कुण्डलिनी सुषुम्ना से उठेगी तभी आप पार हो सकते हैं। लेकिन इसके लिए परमात्मा ने न जाने क्यों एक बड़ी जबरदस्त condition लगा दी है। एक बड़ी भारी अटकल है इसमें, जो देना ही पड़ता है। वो यह कि कुण्डलिनी सुषुम्ना पर तभी आएगी जब परमात्मा का असीम प्रेम उस आदमी में उतर पड़ेगा। जब तक वो प्रेम मनुष्य में उतरेगा नही, कुण्डलिनी उठने वाली नहीं चाहे आप कुछ कर लें। वो नाराज हो सकती है, गुस्सा हो सकती है। लेकिन कुण्डलिनी कभी भी

नहीं उठ सकती है जब तक वो असीम प्रेम सुषुम्ना के अन्दर जगह बनी हुई है, खास इसकी जगह बनी हुई है, हमारे नाभि चक्र और अनहत् चक्र के बीच में, एक बडी सी जगह बनी है। जब तक उसके अन्दर ये प्रेम उतरेगा नहीं तब तक सुषुम्ना से यह प्रवाह उठने वाला नहीं। जैसे समझ लीजिए कि दो सीढ़ियाँ हैं और बीच में एक सीढी है, उस सीढी में और हममें कुछ अंतर है । क्या ? इस अन्तर को आप किसी भी तरह से लाँघ नहीं पा रहे हैं, उसमें कोई पुल नहीं है जिसको आप लांघकर जाएं। और ये दो सीढ़िया बराबर ईड़ा और पिंगला नीचे जमीन पर लगी हुई हैं, Sympathetic Nervous System की Left और Right ये दोनों ही जमीन पर लगी हुई हैं और बीच वाली अधान्तरी लटकी हुई है जो परम में पहुँचाती है। अब Sympathetic Nervous System की जो दोनों सीढ़ियाँ हैं, अब अगर कोई Psychologist हो तो मेरी बात समझ सकता है, वो एक जो Left Hand की तरफ से है, दाहिनी ओर है वो आपको पहुँचा देती है, Ego में, अपने अहंकार में, और जो Right Hand Side में है वो आपको पहुँचा देती है आपके Super ego में, प्रतिअहंकार में। ये दोनों मिलकर के हमारे माथे पर छा जाते हैं, जैसे कि कोई Balloon न हो! इस तरह से ऊपर आ जाते हैं और आकर के इस जगह जहां हमारा तालू होता है, उस पर आकर के दोनों मिल जाती हैं। कभी कभी तो ये पूरे सारे सिर पर ही छा जाते हैं। कभी तो प्रतिअहंकार जबरदस्त होता है और कभी अहंकार। जो भी ज्यादा जबरदस्त होता है वो हमारे दिमाग पर छाया हुआ है और आकर के वो हमारे इस मार्ग को रोक देते हैं, बन्द कर देते हैं। अब जो Petrol हमारे अन्दर Para Sympathetic Nervous System से भरा गया था, जो कुण्डलिनी से भरा गया था, उसका गेट बन्द हो गया। अब हम अलग हो गए, अब हमें लगा कि भई हम कोई हैं! अब अहंकार शुरु हुआ, हमें लगा कि हम हैं। अब यही है भागने का, अपने से भागने का कारण है क्योंकि हम जो हैं, हमको हम जानते ही नहीं कि हम क्या हैं। आप मेरी ओर इतना चित्त लगाकर के जो सुन रहे हैं मैं आपकी ओर अपना चित्त नहीं लगा सकती। मैं कहूँ आप अपनी ओर चित्त लगाएं तो आप लगा ही नहीं सकते हैं क्योंकि आप बह गए हैं उस प्रेम में जो आप हैं। एक जो प्रतिहंकार है, Super ego है, उस पर बोझे जितने भी हमारी ओर से बढ़ते जाते हैं, हर तरह के बोझे, उसमें आप कह सकते हैं कि इस तरह के बोझे जिसमें हम आप को सिखाते हैं ये करो, वो करो, ऐसा नहीं करना चाहिए, वैसा नहीं करना चाहिए, इधर नहीं जाना चाहिए, उधर नहीं जाना चाहिए, ये नहीं खाना, वो नहीं खाना चाहिए, इस तरह की चीजें या ऐसा कहें कि हम बड़े बड़े भाषण देते हैं लोगों को कि आपको हिन्दुस्तानी बनना चाहिए, आपको जापानी बनना चाहिए, आपको इससे नफरत करना चाहिए, उससे नफरत करना चाहिए, हम हिन्दु हैं, हम मुसलमान हैं, हम इसाई हैं, अनेक तरह के सब Conditionings जो हैं ये बोझ हैं उससे यह Super ego दब जाता है। और जो अहंकार है वो ये कहता है नहीं हम तो ये हैं, हमें ये करना चाहिए, वो करना चाहिए। जो कहता है नहीं करना चाहिए वो तो Super ego है और जो कहता है करना चाहिए वो ego है। असल में हम न तो कुछ नहीं करते हैं और न तो कुछ करते हैं। करने वाला तो कोई और ही है। बेकार ही में बचकानापन है। करने वाला अपना काम तो करता ही है और करेगा ही। लेकिन यही जड़ता हमारे अन्दर दोनों है कि हम उस Petrol को इस्तेमाल करते हैं। इन दोनों ईड़ा और

पिंगला से अपने Sympathetic Nervous System से, इससे हम अपने को Conditioning कर लेते हैं, बोझे में डाल लेते हैं।

अब बीचोंबीच सुषुम्ना नाड़ी है। अब बहुत से लोगों ने मुझसे ऐसा भी कहा कि माताजी आप तो इनके विरोध में बोलते हैं, उनके विरोध में बोलते हैं। भाई मैं किसी के विरोध में नहीं बोल रही हूँ। लेकिन तुम तो गलत सीढ़ी पर चढ़ गए न, उससे तो उतारना पड़ेगा ही, जो बीच की सीढ़ी में तुम्हें चढ़ाना है। इसमें किससे मैं विरोध कर रही हूँ? मेरी समझ में नहीं आता कि इसमें किसी से विरोध करके मुझे क्या करना है? मैं तो आपको बता रही हूँ कि आप गलत सीढ़ी पर चढ़ गए हैं। सभी उतर आइए। मै तो बड़े बड़े गुरुजनों से मिलने जाती हूँ, उनसे बात करती हूँ कि आप कर क्या रहे हैं? कुछ करने से परमात्मा नहीं मिल सकता। इन लोगों से कुछ करवाइए नहीं, ये करने धरने से परमात्मा मिल नहीं सकता। ये आपको मैं क्या बता रही हूँ, आप वशिष्ठ पढ़ें, नहीं तो आदिशंकराचार्य को पढ़ें जो कि historical चीज है। उनको पढ़ें, उन्होंने भी यही कहा है कि आप परमात्मा को पाने के लिए कुछ कर नहीं सकते। लेकिन अन्तर है, उनमें और मुझमें जरा सा, थोड़ा सा फर्क है। इतना ही अन्तर है कि उन्होंनें कहा था कि परमात्मा को पाने के अधिकारी बहुत ही कम हैं, इसलिए ठीक है कि कुछ भक्ति में रहें और कुछ अपने ऊपर में योग लगाकर अपने मन को अनुशासित करें। लेकिन उन्होंनें नहीं कहा था कि अनुशासित हो, फिर चाहे वो किसी भी तरह का हो और वैसा भी मन जो विषयों के पीछे दौड़ता है और अपने को जिसे indulgence कहते हैं, दोनों ही मन इस कार्य के लिए व्यर्थ हैं। ऐसा सुन्दर मन जो छोटे बच्चों जैसा निष्पाप हो, वो ही इस परमात्मा को पाने का अधिकारी है। ऐसा उन्होंने साफ–साफ कहा है। लेकिन कौन पढ़ता है उनको? कोई पढ़ता जो नहीं ना! प्रश्न तो ये है कि हम लोग सभी को पढ़ते हैं और उसमें से उनको ज्यादा पढ़ते हैं जिन्हें धर्म के बारे में कुछ मालूम ही नहीं। और मालूम भी है तो थोड़ा बहुत मालूम है। जो अपने को बहुत हिन्दु कहलाते हैं उनको पहले आदिशंकराचार्य को पढ़ना चाहिए। आदिशंकराचार्य ने ही तो हिन्दु धर्म की संस्थापना करी थी, फिर आदिशंकराचार्य को क्यों नहीं पढ़ते हैं? दुनिया भर के लोगों को पढ़ते हैं, उनको क्यों नहीं आप पढ़ते? उनको आप जानते क्यों नहीं? उनमें मुझमें जो अन्तर है वो इतना ही है वो कहते थे बहुत ही करोड़ो में एक दो होते हैं मैं कहती हूँ करोड़ो में लाखों तो है हीं। ये आशावाद का अन्तर नहीं है यह समय का अन्तर है। समा ऐसा है। कलियुग का समा है ही बड़ा घनघोर युद्ध का समय है। अन्धकार और प्रकाश का घनघोर युद्ध का समय चल रहा है। आपको पता नहीं क्योंकि आप तो मुझे ही देख रहें हैं। अपने से परे आप किसी को देख नहीं पा रहे लेकिन जो लोग Realized हैं वो जानते हैं कि कैसा कैसा जंग बाँधा गया है। Negative और Positive forces दोनों अपना जोर बाँध रहे हैं। Sympathetic और para sympathetic का पूरा जोर है। Sympathetic Para Sympathetic को छूकर चली जा रही है और Sympathetic कितनी भी छू लें, गर Para Sympathetic अनन्त से एकाकार हो जाएगी तो उसमें भरता ही रहेगा। कितना भी आप Petrol खर्चा करें, गर पेट्रोल पम्प ही लगा हुआ है तो फिर क्या डरने का? ये सारे Sympathetic का प्रश्न है, Sympathetic की जो Active Consciousness की side है, जहाँ से आप सारा काम करते हैं,

Energy इस्तेमाल करते हैं, वो गर अति इस्तेमाल हो तो कैंसर जैसा रोग हो जाता है। और जिस तरफ में Super Ego होता है वो ज्यादा इस्तेमाल हो तो पागलपन आ जाता है। हम किसी को ठीक ठाक नहीं करते हैं। यह भी कहना कि हम बीमारियाँ ठीक करते हैं एक तरह से गलत ही बात है क्योंकि वो तो Para Sympathetic Nervous System जो कि इन दोनो ही System को ठण्डा कर देती है अपने आप ही मनुष्य जो है वो ठीक हो जाता है। गर कोई पागलपन होगा तो वो भी ठीक हो जाएगा और कोई गर आपके अन्दर में Over Activity से कैंसर जैसा रोग होगा तो वो भी ठीक हो जाएगा। कैंसर का इलाज सिर्फ सहज योग है और कोई उसका इलाज संसार में नहीं है यह बात सिद्ध हो जाएगी। हम जानते हैं थोड़े से ही दिन में यह बात सिद्ध हो जाएगी और हमने बहुतों का इलाज भी जो किया है कैंसर का वो भी लोग यहाँ बैठे हुए हैं, वो भी बता सकते हैं ।

तो भी, एक बात पहले और शुरु से ही कह रही हूँ कि चित्त हमारा कहाँ है? चित्त क्या उस कैंसर पे है जो इस शरीर को जर्जर किये हुए है जो कि जड़ हैं? हमारा चित्त गर चैतन्य पर है तो ...न्य की बात सोचनी चाहिए। जब तक हम अपना चित्त चैतन्य की ओर नहीं रखेंगे तो जड भी हमें सताएगा।सारा काम चैतन्य का है जड़ता का कोई काम ही नहीं है। हमको इतनी आदत जड़ता की हो गई है कि मनु... छोटी जड बातों से चिपक जाता है, छोटी छोटी जड बातों से। जैसे मैं आपसे कहूँ कि एक स्त्री हमारे पास आती थी, उनको Realization हो गया और वो काफी अच्छे से देने वगैरा लग गई। लेकिन Realization का मतलब भी यह तो नहीं कि आप व्यस्त हो गए, आपका पुनर्जन्म हो गया आप निरक्षर हो गए। अब हमें आगे बढ़ना चाहिए। उस पर उनका चित्त, मेरा लड़का जो है वो ठीक हो जाए, मेरे बच्चे जो हैं वो ठीक हो जाएं, मेरा पति जो है वो ठीक हो जाए! फिर कोई कहेगा, वो मेरे पैसे का मामला है ठीक हो जाए! चित्त कहाँ है? अब आप Realized हो गए तो भी चित्त वहीं है जिसे आप छोड़कर आए हैं! जिसने चैतन्य पर चित्त रखा है वो बहुत ऊँचा उठ गया है। आपके बीच में भी ऐसे लोग बैठे हुए हैं जो पढ़े लिखे हैं, देवता स्वरूप हैं, यह लोग वन्दनीय हैं, यही देवता हैं, इन्हीं को देवता कहना चाहिए जिनका Rebirth हुआ है। बेकार की बातें करने वाले लोगों से झगड़ा करने की किसी को भी कोई जरूरत नहीं। जिनको आना हो आए,नही आना है नहीं आएं। उनसे झगड़ा करने की इस पर वाद विवाद करने का समय है ही नहीं।क्योंकि वो लोग वाद–विवाद ही करते रहेंगे। आदिशंकराचार्य ने भी कहा था न कि निम्न कोटि के लोग, उनको तो ठीक है वो अपना किसी तरह से अपने मन को अनुशासित करें और किसी तरह से अच्छे से रहें, चोरी चकारी से बचें। एक अच्छे सामाजिक घटक बन कर रहें। किन्तु परम को पाने वाले लोग, परम की ओर दृष्टि रखने वाले लोग, ऐसी चीजों से सन्तुष्ट होने वाले नहीं । जब तक परम आपने पाया नहीं आप को मेरे ऊपर भी बिल्कुल विश्वास नहीं करना चाहिए। इस ढकोसलेबाजी की बिल्कुल जरूरत नहीं । किसी भी चीज आपको कोई भी बताए आप कुछ विश्वास न करके पहले अपने अन्दर पा लीजिए तभी आप मेरे ऊपर भी उपकार करेंगे। यहाँ कोई बाजार खोलना नहीं है, पैसा कमाना नहीं है, माल कमाना नहीं है। सिर्फ मुझे यहाँ मनुष्य का परिवर्तन करने का है। इस जन्म में नही हुआ तो अगले जन्म में देख लेंगे। तो, हमें अनन्त में ही रहने की आदत सी है। लेकिन अब भी

यह सोच लेना चाहिए कि जो कोई मर चुके हैं वो मर चुके हैं। उनकी बातें करके मत घबराइये। चित्त को अपनी ओर रखें। शायद उनमें से आप एक हों जिन्होंने कुछ कुछ लिख दिया था, हो सकता है कि आप ही वो बड़े भारी लोग हों जिन्होंने बहुत कुछ लिखा हो और आज भी यहाँ जन्म लेकर आए हैं, अपना दावा लेने आए हैं। जो हो चुका सो बीत गया।

सहजयोग में जो साधक होता है उसे कुछ भी नहीं करना चाहिए। जो डूब रहा है पानी में वो कुछ न करे तो अच्छा है। लेकिन बाकी के तैराक लोग उसे बचाते हैं और उसे उठाते हैं। यही साधारण तरह से सहजयोग आप समझ लें। जो लोग अपने में उतर गए हैं, जो लोग पार हो गए हैं, जो अपने अन्दर एकाकार अपनी शक्तियों से हो गए हैं, वही सब कुछ करेंगे। आप शान्त बैठिएगा जो अभी तक पार नहीं हुए हैं। आपके सूत्र में आकर के वो आप को प्यार देंगे, आपके सूत्र में आकर वो आपके चक्रों को ठीक करेंगे क्योंकि आप अभी अपने चक्रों को जानते ही नहीं। जब आप पार हो जाएंगे तब आप मेरी बात जानिएगा कि हाँ यहाँ चक्र है, यह चक्र घूम रहा है, वो चक्र चल रहा है, उनका ऐसा चक्र है। तभी आपको Collective Conscious जिसे कहते हैं 'सामूहिक चेतना', उसका आभास होगा। पहले ही से नहीं नहीं करने वाले लोगों का यह स्थान नहीं है और न ही उनके लिये यहाँ पर कोई व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे लोग जो कि आप है, चाहे वो कितने भी Condition में हों लेकिन जो सच्चाई चाहते हैं और जो चाहते हैं कि हमारे अन्दर परिवर्तन हो जाए, वो सिर आँखो पर हमारे। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस जन्म में ही उनको मिलेगा चाहे उनकी कैसी भी Conditioning हो गई हो, चाहे उनकी कुण्डलिनी के साथ कैसा भी खिलवाड़ हो गया हो। खिलवाड़ बहुत हो चुके हैं, पर मैं कहती हूँ कि किसी की भी कुण्डलिनी में खराबी आ गई हो, उसपर लोग मुझे कहते हैं कि आप विरोध कर रहें हैं! भई पागलपन की बात है! एक माँ है जो बच्चे की कोई चीज बिगड़ी देखती है तो उससे वो बताती है तो किसी का विरोध नहीं करती है। तुम्हारी अबोधिता में, सादगी में, गर तुम्हारा कुछ बिगाड़ हो जाए, तो उसको हम बैठे हुए हैं उसे ठीक करने के लिए। लेकिन पहले ही इस तरह की बात सोच लेना ये कौन सी आर्तता है? यह कौन सी माँ है?

गुरु का आज, गुरु पूर्णिमा का आज दिवस है और सहजयोग का पूर्णवर्णन विषद रूप से करना इतने छोटे समय में सम्भव नहीं। मेरा आज विचार था कि काफी विषय पर मैं कह सकूंगी लेकिन मैं जानती हूँ कि यह विषय अत्यन्त विषद सागर की तरह, और अनेक ध्यान की क्लास में मैंनें लोगों को बताया है। इतना ही नहीं जो लोग Realized है, उस स्तर पर आ गए हैं कि इस बात को समझें क्योंकि उनके हाथ से वो प्रवाह निकल रहा है, वो आनन्द लहरियाँ बह रही हैं, वो प्रेम की लहरियाँ बह रही हैं जिससे वो समझ सकते हैं कि Collective Consciousness क्या है, सामूहिक चेतना क्या है। इसको भी समझना चाहिए कि ये कौन सी चीज है। अभी बहुत से लोग आपमें ऐसे भी होंगे जो मेरी ओर हाथ करके बैठें तो आपके अन्दर ऐसा लगेगा कि जैसे हाथ थरथरा रहें हैं, कंपकंपा रहे हैं। आपको ऐसा लगेगा और मुझसे लोग कहेंगे ये Vibrations आ रहे हैं। ये Vibrations नहीं हैं। वो तो आप हमारे विरोध में हैं, आपमें कोई चीज हमारा विरोध कर रही है पूरा समय। ये जो हम प्यार आपको दे रहे हैं उसके विरोध में थरथरा रहे हैं। ये आप हमारे विरोध में खड़े हैं इस लिए आप थरथरा

रहे हैं, वो Vibration नहीं हैं। और Vibration तो तभी हम मानते हैं जिस वक्त आपके सहस्रार का चलना रुक जाए। कबीर दास जी ने कहा है कि शिखर पर अनहद् बाजोरे। शिखर पर अनहद् की आवाज आती है, माने हृदय में जो स्पन्दन है वैसी आवाज आने लगती है। ये तो हुई जबतक टूटा नहीं, जब टूटने पर सारी ही आवाज टूटकरके, सारी ही आवाज टूटकरके आप परमात्मा से एकाकार हो जाते हैं तब न कोई आवाज आती है, न कोई चीज दिखाई देती है, न कोई चीज दृश्यमान होती है। बहुत से लोग कहते हैं कि हमें दिव्यदृष्टि है, हमें दिव्य फैलाना है। ये सब किसलिए? दृष्टि से क्या होता है? दृष्टि से क्या मिलने वाला है? दृष्टि से ही गर सब कुछ मिलने वाला होता तो फिर खोज काहे की? इस दृष्टि से मिलने वाला वो नहीं और इस कान से सुनने वाला वो नहीं है। किन्तु इसको जानना है अन्दर से। जिसने उसे अन्दर से जाना है वही उसे समझ सकता है। दृष्टि से तो बहुतों को दिखाई देते हैं, बडे बडे करिश्मे दिखाई देते हैं, बड़े बड़े लोगों को चित्र दिखाई देते हैं! मुझे बहुत से लोग आकर बताते हैं कि उसको चमत्कार हैं। मैं कहती हूँ बेटे उससे परे रहो। यह सब परलोक, सब मरी हुई चीजें हैं। इससे परे परमात्मा एक अनुभव है। ये एक अनुभव है। इससे परे परमात्मा हैं, इसे छोड़िए। यह सब कुछ छोडकर निराकार में जब आप एकाकार परमात्मा से होंगे तब इन सब चीजों का अर्थ बनेगा जो साकार बनी बैठी है।

इस आनन्द लहरी से लोगों ने बहुतों को ठीक भी किया, बीमारियाँ ठीक हुई। लेकिन जो सबसे बडी जो चीज हुई है, जिसका मुझे बहुत आनन्द है, कि दस आदमी पार हो गए। सबने मिलकर सामूहिक किया, पार हो गए। अब आप यह कहेंगे कि इतनी जल्दी कोई पार होता है? नहीं होते, बहुत से नहीं होते, चार चार साल से लोग हमारे पास आ रहे हैं, बहुत बड़े–बड़े लोग हैं, कोई तो बहुत भारी Minister Saheb हैं, कोई गवर्नर साहब हैं, कोई कुछ हैं ! नहीं होते तो नहीं होते, हमें इससे क्या करना? हमें किसी से पैसा तो लेना है नहीं कि आप हमें दो हजार दे दीजिए, हम पार कर दें, Certificate दे देंगे! जो नहीं हुआ सो नहीं हुआ, जो हुआ सो हुआ। अभी हम अमेरिका गए थे वहाँ पर एक साहब बहुत बड़े राजा हैं वो कहीं के। वहाँ मिले, वो हमारे साथ थे वो हमसे कहते हैं ये क्या श्रीमाताजी जो आता है आप उसको पार करते हैं हमको नही करते हैं, हमनें क्या किया? हमनें कहा बेटे हम तुमसे कुछ कहेंगे नहीं क्योंकि तुम्हें दुख होगा। तुम धर्म पर इतना लेक्चर देते हो तुम कभी धर्म में उतरे हो क्या? यह रात दिन जो तुम अपनी जान को मारे ले रहे हो वो किसके मारे ? तुम जरा इसे छोडो, थोड़ा सा परमात्मा पर छोड़ो। चार दिन बीत गए उसने कहा भई आज तो हम मान गए, हम India में गए तो सब लोगों ने हम से कहा कि तुम तो भईया एकदम पार हो गए और तुम हमारा कार्य करो। तुम हम को रुपया दो और ये करो।सबने हमें Certificate दिया! मैंने कहा मेरे पास नहीं चलता बेटे क्या करूं? वो तो जो होएगा सो होएगा। इसमें किसी की चापलूसी, किसी की Recommedation कुछ नहीं चाहिए। ये इतना Ultra modren है कि इस पर किसी का असर नहीं चलता। जो होगा सो होगा, जो नहीं होगा सो नहीं होगा। अब जो नहीं हुए वो नाराज हो जाते है और मेरे खिलाफ जाकर कुछ कुछ बोलने लग जाते हैं। कुछ बोलें, अब हम क्या करें जो नहीं हो रहे तो! हम तो चाहते हैं कि सबको हो, रात दिन मेहनत कर रहे हैं कि आपको हो जाए। लेकिन

आप नहीं होते हो तो हम क्या करें? आपकी रुकावट है। ये भी सोचना चाहिए कि किसी को कहते है...... किसी को नहीं कहते और सब लोग कहते हैं कि हाँ हो गया, जितने भी खड़े हैं कहते हैं हाँ हो गया तो हो और गया। सब लोग कहते हैं कि इसका सहस्रार चल रहा है, मैंने कहा नहीं सब का ही चल रहा है। इसमें से कोई तो सत्य होगा। बीमारी को ठीक करना सहज योग का कार्य नहीं। ये जान लेना चाहिए क्योंकि बहुत से लोग ये कहते हैं उन्होंने भी ठीक किया, उन्होंने ठीक किया। किया होगा, कैसे किया होगा? पता नहीं! सहजयोग से सिर्फ कुण्डलिनी की जाग्रति और परमात्मा को पाने की ही बात है और कोई नहीं है। और ये कार्य जो है इसका आप जड से सम्बन्ध नहीं जोड़िए कभी भी इसका जड से सम्बन्ध जोड़ करके इसको जड में नहीं आप जान सकते। क्योंकि बीमारियाँ तो हज़ार तरह से ठीक हो सकती हैं। आपनें सुना होगा डॅाक्टर लैंग एक आदमी था, लन्दन में बहुत बड़ा डॅाक्टर वो मर गया अकस्मात, वो मर गया उसकी इच्छाएं अतृप्त थीं। तो एक Soldier था वियतनाम में उसके Superego में वो घुस गया। उसको कहने लगे तुम London चलो मेरी लड़की के घर। वहाँ पहुँचे तो उन्होंने उनसे कहा उनको कहो कि मैं आया हूँ तुम्हारे अन्दर। तो लडके ने कहा इसका क्या विश्वास? तो उन्होंने उसको सब बताया, जो कुछ भी उनके बीच मे गुप्तवार्ता, Secret हुए थे वो सब बताए। उसको विश्वास हो गया। उसने कहा तुम फिर से मेरा Organisation शुरु करो, मैं तुम्हारी मदद करूंगा क्योंकि यहाँ परलोक में बहुत से डॅाक्टर हैं जो Menifest करना चाहते हैं, जो अवतरित होना चाहते हैं। उनका बड़ा भारी International Organisation है, सच्चे लोग हैं, कहते हैं हम लोग झूठे नहीं। इसको भगवान का नाम नहीं देते हैं। उन लोगों का ऐसा है कि उनको आप चिट्ठी लिख दीजिए तो वो आपको लिखकर भेजते हैं कि दस बजे उतने Time पर कोई आदमी आपके पास आकर कुछ कर जाएगा, आप आराम से देखते रहना। और बराबर उसी वक्त आपको कुछ लगता है कि कुछ हुआ अपने अन्दर में और आप ठीक भी हो गए। बहुत से लोग ठीक भी हुए हैं लेकिन तो भी ठीक करने से केवल शरीर ही तो ठीक किया है, उससे परम तत्व तो किसी ने नहीं पाया! परम तो मिला नहीं, ये शरीर तो यहीं छूट जाएगा और फिर वहाँ जाकर फिर यहीं आना है! और जिन पर वो ऐसे प्रयोग कर रहे हैं वो ये भी नहीं जानते, वो भी अबोध हैं, वो भी उनका बचकानापन है!

वो जानते नहीं हैं कि जिस Spirit को वो आज इस्तेमाल कर रहे हैं वही कल उलट कर हमारे ऊपर आएंगे। मैं सोचती हूँ Dr. Lang थोड़ा सा जानते थे, नहीं तो अपनी लडकी के अन्दर क्यों नहीं घुसे? वो एक Soldier के अन्दर जाकर क्यों घुसे? और Spirit का देह जो होता है उस पर ये जड़ नहीं होता, इसलिए बहुत कुछ देख सकता है बनिस्बत हमारे। जिसको कि आप Para Psychology कहते हैं, जिसे कि आप आत्मा का आशीर्वाद कहते हैं, जो कूदना होता है, जो चीखना होता है, चिल्लाना होता है और सम्मोहन करना होता है सारा Spirit का काम है। उसमें कुछ अच्छे Spirit भी होते हैं कुछ Spirit बहुत ही...... जैसे हम हैं वैसे Spirit भी हैं। इसमें राक्षस भी होते हैं, महादुष्ट भी हैं। आप उन्हें आज देख नहीं रहे, हो सका तो बाद में आपको मैं दिखा भी दूंगी, जैसे आज मैं आपको कुण्डलिनी दिखा रही हूँ। ऐसा समय आजाय तो मैं आपको ये भी दिखा दूंगी।

लेकिन हैं। उनका वास्तव्य आप देख सकते हैं,उनका असर आप देख सकते हैं, उनका असर आप देख सकते है और हर एक धर्म में उनके बारे में लिखा है। हिन्दुओं में सुर–आसुरों की बात लिखी है। जो है सो है। जब आप positive की बात करेंगे तो Negative आपको दिखाना ही पड़ेगा कि ये positive है और ये Negative है। जो धर्म और अधर्म की बात नही कर सकता वो हवाई बात है। सिर्फ धर्म की बात करने से कैसे होगा?धर्म भी है और अधर्म भी है। उसकी पूरी सारी रेखा है, जो धर्म है वो अधर्म नही हो सकता, जो अधर्म है वो धर्म नहीं हो सकता।

इसका Confussion कलियुग की वजह से कर दिया, लेकिन ऐसी बात नहीं है, जो Negative है Negative है जो positive है वो positive है। जो Negative चीज है उसको समझ लेना चाहिए। Negative का मतलब है मरी हुई, Dead sympathetic में बैठी हुई। वो है, और उस Negative का असर बहुत ज्यादा उस जगह जब होता है जहाँ पर मनुष्य जड़ होता है जैसे बम्बई शहर में हम लोग बहुत जड़ हो गए हैं। रात दिन पैसों की ठनकार, Election के झण्डे! इन सब चीजों में इतना चित्त उलझा रहता है। रात दिन यह पढ़ पढ़ कर और सुन सुनकर मनुष्य का चित्त ही नहीं जाता है वहाँ पर। Enquiry ही नहीं है, खोज ही नहीं है! अरे हम क्यों जी रहे है! क्या यही सब करने के लिए? उनके गुण्डे ने वहाँ मारा,उन्होंने जाकर उनकी बुराई करी, उन्होंने जाके उनको ऐसा किया! क्या यही सब करने के लिए हम संसार में आए हैं? मनुष्य का चयन गलत है। इस जड़ तत्व से बहुत बच कर रहिए। लेकिन ये जड़ तत्व तो आपका अपना घिराव है। इसके अलावा भी collective subconscious है। जिसे कहना चाहिए परलोक। उससे भी उत्थान हो रहे हैं,वही उत्थान हमारे सहजयोग में सबसे ज्यादा हो रहे हैं। और जिस आदमी पर ऐसा कुछ हो गया हो उसके लिए बहुत कठिन हो जाता है कि वो सहजयोग में परमात्मा को पाए। इसमें दोष हमारा नही है। सच बात है इसमें हमारा कोई भी दोष नहीं। दोष न आपका है न हमारा है। थोड़ा आपके कर्मों का जरूर होगा नहीं तो आप ऐसी जगह क्यों गए जहाँ पर जाकर के आप पर ऐसा दोष लग गया? पूरी सतर्कता में स्वयं ही अपने आप होने वाला जीवन का विकास यही सहजयोग है। भूत–प्रेत Spirit, सन्त भी, इनसे आप परम नहीं पा सकते, वो मरे हुए लोग हैं। परम सिर्फ जिन्दा में ही आ सकता है, मरे हुए में गर जाता है तो क्यों वो यहाँ आ रहे हैं हमारे ऊपर में, वहाँ क्यों नहीं बैठते? जिन्दा होना चाहिए। आदमी जब तक जिन्दा नहीं होगा, सतर्क नहीं होगा, उसकी चेतना जब तक पूरी तरह से जागृत नहीं होगी तब तक उसके अन्दर सहजयोग नहीं उतर सकता। पूर्ण जागृत अवस्था में जो चीज आप पाते हैं वो ही परम है। समाधि में लोग सोचते हैं कि आँखें ऊपर हो गई गुरु हो गए हम। दो–दो घण्टे बैठे हुए हैं! यह सहजयोग से नहीं होने वाला। ये सब आपका Subconscious है जिसे कि मैं कहती हूँ मृतलोक, जिसमें आप उतर रहे हैं। इसका कोई भी आपको चिरस्थायी फायदा नहीं है। जिस मनुष्य को परम पाना है उसको सोच लेना है कि जो मैं सतर्कता में, पूरी स्वतंत्रता में पाऊँगा वही मैं पाऊँगा। पूरी स्वतंत्रता आपको, यहाँ तक किसी भी तरह का भक्ति भाव मेरे प्रति न हो, बिल्कुल नहीं होना चाहिए। जैसे एक साधारण सौम्य स्त्री होती है वैसे ही मैं हूँ। घर गृहस्थी की एक साधारण स्त्री हूँ, ऐसा ही समझ लीजिए। कुछ विशेष हूँ ये सोचना

ही नहीं। ऐसा ही सोचकर आइए। ये स्वतंत्रता भी होनी चाहिए। तभी आप पाएंगे चाहे आप दस हों, चाहे आप एक हों, हमारे लिए काफी है। इसके number से नहीं होता है हालांकि number भी, बढाना होगा। Number जरूर बढाना होगा इसमें कोई शंका नहीं । कार्य जोरों मे गर हो जाए तो हो सकता है। हालांकि परम उपर से बहुत अलग है। एक नव निर्माण के लिए एक नई चेतना के लिए, एक नए तरह के मानव की इसमें व्यवस्था की हुई है। इस Para Sympathetic में। एक प्रेम है, एक ज्ञान है, एक सौन्दर्य शैली। मनुष्य की रचना होनी ही पड़ेगी और होके ही रहेगी।

आप लोगों ने इतनी देर तक मेरा भाषण सुना है, गुरु पूर्णिमा के दिन मुझे यही कहने का है कि इस जन्म में मैं गुरु हो गई, और तो किसी जन्म मे ये कार्य नहीं किया था। पहली मरतबा गुरु का कार्य करना पडा। शायद वो भी माँ को ही गुरु होना पडता है। ये कलियुग का मामला है इसलिए नितांत परमात्मा की जो भी शक्ति है ये किसी माँ के हृदय से बहे, उसी की करुणा और उसी के प्रेम में कुण्डलिनी को संजोया जाए और उस शिखर तक पहुँचा दिया जाए जहाँ पर कि वो अपने दोलन में, अपने आनन्द में, अपने स्थान में विराजित हो। ये आज हमारे ही भाग्य में है, इसीलिए इस जन्म में ये गुरु का स्थान स्वीकृत किया है। माँ गुरु बन जाए, ऐसा कहीं होना बड़ा कठिन है क्योंकि माँ अत्यन्त कोमल होती है। गुरु तो मार भी देगा, पीट भी देगा, डाँट भी देगा, लेकिन माँ एक भी कठिन शब्द बोलते वक्त उसके हृदय में कचोटती है, तकलीफ होती है– बहुत ही, और जब वो देखती है कि मेरे बच्चे कितनी साधना से आए हुए है और इनको किस तरह से इनको संजोकर के, संभाल करके, प्यार से उस किनारे ले जाना है तब उसकी जिम्मेदारी भी इतनी बढ जाती है। उसका सारा व्यक्तित्व ही दूसरा हो जाता है। लेकिन आदिकाल से ही लोग कहते आए हैं कि माँ से बढकर गुरु कोई नहीं है। गुरु उसी को मानिए जो आपसे बड़ा हो, बड़ा हो, जो आपसे बड़ा परमात्मा हो। रामदासस्वामी ने गुरु के बारे में ऐसा कहा था कि गुरु उसे मानिए जो स्वयं तो पारस है ही दूसरों को छूते ही सोना नहीं बना देता उसे, पर पारस बना देता है। जैसा खुद है वैसा ही दूसरों को बना देता है। और इसीलिए ये माँ स्वरूप चीज है। माँ बच्चों में होती है। बच्चों के गौरव में गौरव मानती है। इसलिए इस जन्म में शायद परमात्मा की यही इच्छा रही कि ये प्रेम और ये ज्ञान एक माँ के अन्दर से आपको मिले। अभी हम लोग ध्यान में जाएंगे इसके बाद में, आप लोग आर्तता से इसमें बैठे। अपने विचार, अपने विरोध, इनको छोड दें थोडी देर के लिए। इसलिए कि आपको अपना मंगल और कल्याण करना है। अपने साथ अच्छाई है, अपने साथ बुराई है, किसी भी एक चीज को पकड़े बैठे हुए हो तो उसे छोड़ दीजिए थोडी देर के लिए। हमें आपसे कुछ लेना देना नहीं और आपकी स्वतंत्रता हमें छीननी नहीं। किसी भी तरह, किसी भी कीमत पर मैं आपकी स्वतंत्रता छीनती नहीं। जैसे लोग पागल जैसे किसी के पीछे दौडते हैं, हजारों रुपया उन्हें दे देते हैं, चीजें दे देते हैं! अरे चीजें लेते किसलिए हो? गुरु वो जो आपसे कुछ नही लेता। गुरु को आप क्या देंगे? आप मुझे कुछ नहीं दे सकते, आप मुझे Vibration भी नहीं दे सकते, आप को आश्चर्य होगा कि आप मुझे Vibrations भी नहीं दे सकते!

एक दिन मेरे पैर में चोट लगी तो एक Doctor थी, वो कहने लगी, 'माताजी मैं आपको Vibration दूँ?' मैंने कहा देखें दो तो सही। जब वो Vibration

देने लगी तो चोट की जगह से इतनी तेज उनको Vibration आई कि वो खुद ही ध्यान में चली गई। कहने लगी इस जगह से Vibrations आ रहे हैं। और मेरी जो चोट थी वो एकदम से हल्की होने लगी। गुरु वो जो आपसे कुछ भी न ले सके, जो शिखर पर बैठा हुआ है वो नीचे की ओर बहेगा, उसकी ओर कोई नहीं, कुछ नहीं बहेगा। सब समझ की बात है।

गर मैं किसी से कहती हूँ बेटे मुझे मत दो क्योंकि ये सब ढकोसला है, आप मुझे कुछ भी नहीं दे सकते। उल्टे आप कुछ माँगते हैं मुझसे तो सारा का सारा व्यक्तित्व जो है वो खौल उठता है, अन्दर से सारी की सारी प्रभावशाली शक्तियाँ दौड़ने लग जाती हैं कि किस तरह से प्रेम से मैं इस बच्चे को सम्हालूं! जरा सा कोई कुछ मांग ही ले! परम, परम मांगिएगा। आज की गुरु पूर्णिमा के दिन मेरा आपको बहुत आशीर्वाद है और जितने Realized लोग हैं उनको विशेष रूप से, और उनसे मेरी विनती है कि जैसे अपने पाया है दूसरों को देनें का पूरा प्रयत्न करें।

उनको भी समझाने का प्रयत्न करें। हो सकता है वो लोग आपसे नाराज हो जाएं, गुस्से हो जाएं, मारेंगे, पीटेंगे। ये कुछ भी नहीं हैं, इससे कहीं अधिक हमने सहा है, इसलिए कुछ भी नहीं। वाद विवाद करेंगे, आपको नहीं मानेगें, कोई हर्ज नहीं। छोड दीजिए उन्हें, जो आपको मानते हैं उन्हीं पर यह अनुग्रह करें। यहाँ तो केवल देना है, आपको देना है, आप दे सकते हैं, सब मेरे बच्चे। मेरा प्यार संसार में सब जगह पहुँचे और घर घर दीप जलें।

बहुत बहुत आप सबका धन्यवाद

हर श्वास में सहजयोग को प्रस्थापित करना होगा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

25.11.1975 मुंबई

शान्ति के लिए सहजयोग का उद्भव हुआ है। लेकिन मानव के लिए सहजयोग को समझ लेना इतना आसान नहीं, क्योंकि कोई बहुत बड़ी महान चीज एक दम सहज में मिल जाए तो उसका महात्म्य, उसका आँकलन, उस शक्ति के लिए श्रद्धा, उसके लिए भक्ति, पूर्ण चित्त से उसको अन्दर में तादात्म्य कराने के लिए मेहनत, इन सब चीजों की कमी रह जाती है। इसीलिए आप देखिएगा कि अधिकतर सहजयोगी बड़े Casual होते हैं। पर दूसरे जो स्वामी लोग हैं, जो आपको मालूम है कि किस तरह से लोगों को ध्यान में डालते हैं और कैसे उनका फायदा उठाते हैं। जो आपसे पैसा लेते हैं, आप से मेहनत करवाते हैं, आपको सिर के बल खड़ा करते हैं, शारीरिक श्रम करवाते हैं, कोई न कोई मेहनत करवाते हैं, कुछ न कुछ करवाते हैं, तो आपका जो अहंकार है उसमें थोडा सा तृप्त होकर के आप उनसे चिपके रहते हैं। आपने ऐसे भी लोग देखे होंगे कि जो कुछ अपना है सब कुछ देकर के, पैसा वगैरा, और इन साधुओं के पास में वो लोग झाडू मारते हैं।

सहजयोग की प्राप्ति इतनी सहज में हो जाती है कि उसके प्रति लोग Casual रहते हैं। जैसे आँख की प्राप्ति हमको एकदम सहज हो गई तो उसकी तरफ हम Casual हैं, उसकी कोई कीमत ही नहीं हमको कि ये आँख कितनी कीमती है। जिस दिन आँख हमारी जरा सी दुखती है तो पता चलता है, हे भगवान! इसीलिए बाधा का होना भी जरूरी हो जाता है। गर बाधा नहीं हो तो सहजयोगी तो बिल्कुल परवाह ही न करें। बाधा तो आपके ऊपर निर्भर है, जब तक आप पकड़ेंगे तब तक बाधा है, लेकिन क्या किया जाए? कुछ कुछ लोग आपको मालूम है कि ऐसे है जो पार हो गए सो पार हो गए, उनको कोई छूता नहीं। कभी वो पकड़ते नहीं हैं। लेकिन उनकी पूर्वजन्म की बड़ी पुण्याई है। उनको भी सतर्क रहना चाहिए, इसे भूल नहीं जाना चाहिए कि हमको पकड़ा नहीं तो हम कोई विशेष हो गए, कोई बात नहीं। Casual जिसे कहते हैं, Casually सहजयोग के प्रति रहना हम लोगों को बड़ा मँहगा पडेगा। आँख के प्रति आप गर Casual रहें तो कोई हर्जा नहीं क्योंकि आपकी आँख, हाथ,पैर शरीर देखने वाला तो है ही कोई तैयार। और उसको देखने का नहीं है लेकिन सहजयोग आप ही को देखना है। ये दोनो में अन्तर है। आपका शरीर कोई संभाल लेगा, आपका सबकुछ जो है, जो कुछ भी बाकी का जितना भी, Three Dimension जिसको मैं कहती हूँ, वो सब संभल जाएगा, लेकिन आपका सहजयोग आप ही को साधने का है, आप ही को उसमें बढ़ने का है। और Casual इतने हम हैं, इतने Casual हैं, कि हमारे पड़ोस में ही कोई आदमी बैठा हुआ है उससे भी हम नहीं कहते कि, अरे भई जिससे भी मिलो उससे यही बात करो, Dedication इसी का देना पड़ेगा सहजयोग को। अभी बहुत से लोग हैं, शरीर के बहुत से अंग अंग अलग अलग बिखरे हुए हैं। अभी कल देखिए कि वो एक उस दिन की बात है वो लडकी के बाधा हुई तो उसका भाई आया, वो फट से पार हो गया। संसार में ऐसे बहुत से आपके अंग-प्रत्यंग कहीं कहीं गिरे हुए हैं उनको सबको इक्ट्ठा करना है। ये भी बड़ा भारी सहजयोग है।अपने घर में ही कोई आदमी बगैर सहजयोग के कैसे रहता है, देखिए। आप गर हमारे घर में हैं तो सबको सहजयोग में आना पडेगा, पार होना पड़ेगा,

बाधा रखनी नहीं पड़ेगी। इतना efficient होना चाहिए। उसमें गुस्सा नहीं करना, लेकिन उनसे बात यही करनी चाहिए बोलना यही चाहिए। उसमें बिल्कुल Casual पना नहीं चलने वाला। खाते, उठते बैठते जैसे श्वास चलती है, हर श्वास के साथ में सहजयोग को प्रस्थापित करना होगा। क्योंकि गर आप अपने को कोई विशेष रूप मानते हैं और आप गर अपने मन्दिर को सोचते हैं कि इसमें कोई विशेषता है तो इसमें घण्टा नाद होना ही चाहिए हर समय। नहीं तो व्यर्थ जाएगा। सहजयोग भी व्यर्थ जा सकता है। ये समझ लीजिए आप। ये भी दूसरी बात आपको बता दूँ कि बगैर सहजयोग के आपका कोई व्यक्तित्व है नहीं। अब उसके बगैर आपका निखार भी है नहीं, उसके बगैर आपका कोई स्थान भी है नहीं। क्योंकि परमात्मा के राज्य में जब आप आ गए तो उसका आपको Citizenship लेना ही पड़ेगा। मैं बहुत से लोगों से सुनती हूँ, कल हमारे भाई साहब ही आए थे कहने लगे कि हम गजानन महाराज के पास गए थे। मुझे तो पता ही नहीं कि कौन गजानन महाराज हैं कि कौन हैं, फिर उस लड़के ने बताया कि वो गजानन महाराज थे। उस पर हमने देखा कि आज्ञा चक्र, विशुद्धि चक्र, फलाना तीन चक्र पकडते हैं। वहीं बैठे वो भी थे इधर, उन्होंने अपने अनुभव बताए गजानन महाराज के कि उनके फोटो से ही पकड़ते हैं। मैंने कहा, लो अब उनके तीन चक्र पकड़े हुए! मैनें कहा घर में तुम्हारी बहन बैठी हुई हूँ तो काहे को गजानन महाराज के पास गए थे? कहने लगे सबने बोला सन्त पुरुष हैं। मैने कहा अरे भई Viberation से देखो सन्त पुरुष हैं कि नहीं। Casually चले गए! उनको भी देखना चाहिए। ये कोई सहजयोग हुआ? राजा बनने के बाद भिखारी बनने वाले लोगों को निकाल देना चाहिए। लेकिन जान के नहीं बन रहे भिखारी, वो तो Casualness में चले गए। हम उधर भी चले गए, कि क्या करें हमारी बीवी ऐसी है, क्या करें हमारा बाप ऐसा है, क्या करें हमारी लड़की ने कहा है तो चलो, हम भी चले गए। फिर क्या हुआ? आज तो माताजी आज्ञा चक्र पकड़ गया ,पेट का वो पकड गया, नाभि चक्र पकड़ गया। तीन चक पर खास पकड़ ही लेकर आए। अभी सगी बहन मैं उसके इधर बैठी हुई हूँ उसको गजानन महाराज जाने को किसने कहा था? कहने लगे कि हमने सोचा था कि हम लोगों की हालत बहुत खराब हो गई तो अब साई बाबा के जाएंगे। तो मैने कहा तुम पहले इधर आओ, अपना पेट ठीक कराओ, फिर साई बाबा के जाओ। नहीं तो वहाँ जाकर तुमको क्या अक्ल आने वाली है, हजारों जाते हैं तो क्या है वहाँ पर? तुमको माँगना क्या है? Material चीज माँगनी है, तो साई बाबा के पास जाइए। कब मनुष्य की ये इच्छाएं पूरी होंगी? अब सब हो गया न Materially, और क्या चाहिए तुम लोगों को? राजे रजवाड़े होकर भी क्या चाहिए तुमको अब। जो देने को आए हैं, जो पाने का है वो बहुत महत्वपूर्ण है। मानव जाति के लिए। परमात्मा ने बहुत सोच विचार के तुमको बनाया। इधर उधर का पढा हुआ दिमाग में इतना ज्यादा मैल है उस सबको उठाकर फैंक दो। फालतू की जितनी चीजें इक्ट्ठी करके रखी हुई है सारा जंग। इस मन्दिर में से फैंक दो, इस मन्दिर की प्रतिष्ठा बनाओ। हर एक हृदय में एक–एक दीप जलाने का है। अपने घर को पवित्र करो, अपने परिवार को पवित्र करो। अपने समाज को पवित्र करो। रिश्तेदारों का आपको बड़ा ख्याल है, रिश्तेदार बहुत हो गए, उनके लिए आए, मेरी सास आई है, उसके लिए मुझे देना चाहिए। क्या देगी तुम्हारी सास तुमको? जाओगी तो जूते देगी,

जूते! आपके रिश्तेदार सिर्फ ये हैं आप जान लो, इनके सिवाय तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है।

सहजयोगी ही सहजयोगी के रिश्तेदार हैं, क्योंकि वो भाषा ही और बोलते हैं, उनका तरीका ही और है, उनका ढंग ही और है। इस पर प्राण लगाने पड़ेंगे अपने। और प्रेम, प्रेम को बाँटना होगा। चित्त की धार पर प्रेम बहेगा, चित्त को पहले ठीक करो, चित्त को पहले हल्का करो। सब दुनिया भर की चीजें इस चित्त पर रखने से ये सहजयोग कैसे उतरेगा? चित्त के ही ऊपर चला आ रहा है धड धड़ धड़ धड़ देखिए। प्रभु तो तुम्हारे ऊपर उडेलने के लिए बैठा हुआ है। लेकिन तुम्हारा चित्त कहाँ है? दो दो मिनट में चित्त इधर–उधर होता है! उसके चरण में सिर्फ चित्त को देने का है, तुम्हारा पैसा, धेला, कौडी, कुछ नहीं चाहिए उसको। ये मनुष्य की मूर्खता है, उसने अपने पास जो जोड़ रखा है उसका महत्व क्या है? महत्व अपने चित्त का करो। इसी चित्त पर परमात्मा उतरेगा। तुम लोगों को दस दस बीस–बीस साल तो उन्होंने जवान कर दिया! शरीर तुम्हारा ठीक हो गया, मन की भावनाएं तुम्हारी शुद्ध कर दीं। तुम्हारे अन्दर Collective Concious आ गया, अब क्या? अभी दौड़ रहे हो इस चीज के लिए,उस चीज के लिए? उसका महत्व ज्यादा है तुम लोगों को। पहले भी जन्म में बहुत कमाया था, सब गोबर यहीं छोड़कर गए थे, और फिर इक्ट्ठा करो और फिर यहीं छोड़कर जाओगे। Casually रहना सहजयोगी के लिए बड़ी ही खतरनाक चीज है। गफलत कहते हैं जिसे। बड़ा भारी युद्ध खड़ा हुआ है! आप जानते हैं कि किस कदर दूसरे भी संहार के तरीके तैयार हो गए हैं। सहजयोग एक कमल जैसे कीचड़ में खड़ा हुआ है, नाजुक, सुरभित, सुगन्धित, सुन्दर और आप उसीकी पंखुड़ियाँ हैं। कीचड जितना भी आप पर गिरेगा सब झटक जाएगा जब आप जानेंगे कि आप कमल हैं। आप कीचड़ नहीं हैं। गर मैं कहूँ किसी से कि तुम्हारा कोई चक्र पकड़ा है तो वो कीचड़ है, निकाल डालो उसको। तुम तो कमल बना दिए गए हो न! तुम तो कमल हो, कमल पर अगर कीचड़ गिर गया तो कमल को चाहिए कि उठाकर फेंक दे। और टिकने भी नहीं वाला उस पर। हर एक को सहजयोग के प्रति जागरूक होना पड़ेगा। गर सहजयोग की नैया पार लगानी है तो अपनी छोटे छोटे परिवार के, और छोटे–छोटे घर के प्रश्नों को लेकर के मत बैठें। जब तक इस कीचड़ को पकड़े रहोगे अपने साथ, कोई तुम्हारा साथ देने वाला नहीं है। लड़के की शादी होएगी, लड़की की शादी होएगी, फलाना होगा! होगा,होगा, नहीं होगा नहीं होगा।

उसमें खर्चा करेंगे, उसमें नाम कमाएंगे और सहजयोग में, सहजयोग के लिए टाइम नहीं आपको! सबसे बड़ी बात ये है कि भारतवर्ष के लोगों के पास पैसा वैसा ज्यादा नहीं है। उनकी इतनी, देखा जाए तो, आर्थिक दशा कुछ खास अच्छी नहीं हैं। लेकिन जान के रहना चाहिए हमें कि इसी भारतवर्ष में Viberations हैं जो सब चीज को Control करता है। अभी तक कोई और देश होता तो Collapse हो गया होता! उसी Viberations के सहारे ही तुम लोग जी रहे हो। कितना बड़ा देश है! ऐसे महान देश में पैदा हुए हो। और सब कुछ तुम जानते हो वहां अंग्रेजों से तो मुझे बताना ही नहीं आता कि इन्हें मैं क्या बताऊँ। देवी महात्म्य इन्होंने पढ़ा नहीं, तो देवी क्या मालूम है उनको? इनको माँ मालूम नहीं, इतने गन्दे लोग हैं वहाँ जिनको माँ नहीं मालूम मैं इनको क्या बताऊं माँ का महत्व? मुझे तो रोना आता है! और तुम लोग ऐसे casual हो गए हो, जैसे दाढ़ी बनाते हो ऐसे ही ध्यान में बैठते हो!

कैसे होगा भाई? मेरे भाई लोग बोलते हैं क्यों मर रही हो सुबह से शाम तक? तुम्हारी तबियत को कुछ हो जाएगा तो तुम्हारा पति हमें क्या कहेगा? रात को चार–चार पाँच–पाँच बजे सोती हो, दिन भर मेहनत कर रही हो, क्यों कर रही हो? क्या तुमको मिलने वाला है, समझ में नहीं आता है? अभी उनको समझ में नहीं आता है और मेरी भी समझ में नहीं आता है। जब एक बैठेगी उनकी मेरी समझ तभी कुछ काम बनने वाला है। अकेले मैं लड़ सकती हूँ न,लेकिन उससे तुम लोगों को क्या लाभ होगा? आपको क्या मिलने वाला है। Casual रहना, Casually चलना, अपने प्रति उदासीनता है, अपना अनादर है, स्वयं ही। जिस राजा को सारा धन मिल गया है वो Casually रह रहा है! अरे राज करो, विराजो। छोटी–छोटी बातों को लेकर के क्या सहजयोग को खत्म करने वाले हो? अपने अन्तर को साफ करो, अपने हृदय को साफ करो,चालाकी छोड़ो, अपने हृदय को साफ करके देखो कि क्या हम अबोधिता में, Innocence में, बैठे हुए हैं? मेरे ऊपर कोई उपकार नहीं हो रहा है आपका। आप ही पर, अपने पर ही, आप जो माँग रहे थे, सालों से खोज रहे थे वही मिल रहा है। अब चरम सीमा पर आने पर ये क्या पागलपन लगा रखा है? जो चरम सीमा पर आ चुका है उसको मुख मोड़ कर आपने देखा नही होगा लेकिन मैंने बहुतों को देखा है। पहले तो चिपकाना पड़ता है, चिपको, चिपको, चिपको। कभी कभी तो ऐसा भी विचार बन सकता है आप लोगों का कि हम लोग क्या कर सकते हैं, हमारे देश में तो इतनी खराबी है, हम लोग तो गरीब आदमी है यहाँ पर, हमारी तो परेशानियाँ है, हम क्या देश का उद्धार करेंगे? माताजी हमको चढ़ाती हैं। अच्छा है कि आपके पास पैसा नही है। इतने लोग, पैसेवालों, को Realization दिया है, कहाँ हैं? उनमें वो दो चार हैं और वो भी कंजूसी करते हैं। बहुत पैसे वाला तो कोई है ही नहीं अपने पास में। लाखोंपति, करोड़ोंपतियों को दिया है Realization, क्या कर रहे हैं? अच्छा है पैसा नहीं है। उसकी झंझट तुम्हारे बहुत कम चिपकी हुई है। कम पैसे हैं, बहुत अच्छा है। देख लिया मैंने ये पैसे वालो, को बड़े बड़े पदाधीशों को देखा, बड़े–बड़े Minister को देखा, उनको, क्या है? वो तुम्हारे जैसा आनन्द तो वो लेते ही नहीं हैं। पार हो गए, बैठ गए उसके बाद में ढम से। बड़ा पैसा लेकर बैठेंगे। बड़े बड़े Minister हुए, बड़े–बड़े Secretary हुए हैं पार, पर क्या किया उन्होंने? उनके घमण्ड से भगवान बचाए रखे। भगवान के पास में कौन है Secretary और कौन है राजा? वो आपसे भी अच्छे हैं कि उनको कोई पैसे का गम ही नहीं है। आप और भी अच्छे हैं कि उनको कोई Position नहीं है। इन सब मूर्खताओं से छूटे हुए हैं ये। इनको तो बस माताजी चाहिए। कल कुछ बच्चे आए थे उनकी माँ ने कहा अब चलो, कहने लगे अभी थोड़ी देर तो ठहरो न। इनको कोई चाक्लेट नहीं दे रही थी, कुछ नहीं दे रही थी, बैठे थे। माताजी ये यही हमको चाकलेट चाहिए। हमको सिनेमा विनेमा नहीं जाने का, हमको यही चाहिए , माताजी के पास। वो ज्यादा समझते हैं तुम लोगों से। तुम भी ऐसे ही हो जाओ। सबकुछ छोड़ दो पिछला, ऐसे ही हो.जाओ, फिर से तुम बच्चे ही हो गए हो अब। क्या सुन्दर रूप हैं! तुम भी ऐसे ही थे बेटे। तुम भी ऐसे ही थे सब लोग, ये कहाँ से ऐसे विद्रूप हो गए सब लोग! अपनी विद्रूपताओं से घबराओ, दूसरों की सुरूपता को देखो। मैं जब चली जाऊंगी तब सहजयोग पर, माँ चली जाती है तो बच्चों का काम है घर संभालना। आने पर दिखना चाहिए कि सहजयोग बढ़ा कर रखा हुआ

है मेरे बच्चो ने, और नहीं तो आने पर दिखा आज वहाँ उसके आज्ञा चक्र पकडे हैं, किसी का नाभि चक्र पकडे है किसी का विशुद्धि चक्र पकडा हुआ है, कोई उनके पास चले गए, कोई उनके पास चले गए, कोई बीमार पड़ गए , किसी की हालत खराब, किसी की बीबी हस्पताल, कोई पागलखाने में। अरे भई ये क्या हो गया? और ये नहीं सोचना है कि हम छोटे आदमी हैं। अरे तुम लोग बहुत बड़े आदमी हो। ये बडे बड़े किसी काम के नहीं, ये पार ही नहीं होते। अपना बड़प्पन जान करके,बात करो, अपने को खोलकर के बात करो।एक अक्षर सहजयोग में जो बोलता है सरस्वती साक्षात् वहाँ आकर बैठ जाएगी, मै आपको बता रही हूँ। आप बोलकर देखिए। आपके अनुभव हैं ये। सहजयोग पर बोलना शुरु करो सरस्वती आपके वाणी में आ जाएगी, लिखना शुरु करो, आपकी लेखनी में आ जाएगी। किसी कार्य को लो, साक्षात हनुमान खड़े हैं हाथ जोड़कर के कि माँ बोलो किसके साथ खड़ा हो जाऊं मैं? हनुमान जी सारा काम कर रहे हैं आपका, कोई भी काम लो, माँ का नाम लेकर के, कोई सा भी काम संसार का लो चाहे, किसी चीज का वो करेंगे, और सहजयोग के लिए तो साक्षात् पाँचों चिरंजीव खड़े हुए हैं आपके लिए।

सब लोग अपनी शक्तियाँ तुम्हारे ऊपर लगा करके पीछे Background में खड़े हुए हैं और देखा क्या कि नट जी जो आए हैं उनकी हालत खराब। वो इधर उधर देख रहे हैं। नाटक कैसे रचेगा? आः ाा अधूरापन नहीं चाहिए। मेरे को टाइम नहीं मिलता माताजी, ध्यान में बैठने को टाइम नहीं है। इसका मतलब क्या? टाइम है किसके लिए? किसने दिया टाइम तुमको? अपने लिए Time नहीं मिलता है तो भगवान का क्या दोष है? Time कैसे नहीं मिलता है? चार बजे सवेरे उठना चाहिए। तुम्हारी माँ को देखा है तुमने, कितने घण्टे सोती है? चार बजे सवेरे उठकर के बैठो, अपने मन से कहो, चार से पाँच बजे सवेरे ध्यान में जाने का है। निद्रा विद्रा फँक देने का है। रात का जागरण छोड़ो, फालतू लोगों से बातचीत करना छोड़ो, फालतू Associations छोड़ो, रिश्तेदारी छोड़ो। बेकार के लोग हैं, सब भूत वाले हैं, इनके लिए अपना Time बर्बाद करने के लिए हम हैं कहाँ यहाँ पर।

मैं तो एक भी क्षण, आपको आश्चर्य होगा कि, सहजयोग के सिवाय बिताती नहीं, एक भी क्षण! हमारे पति के दफतर में हजारों आदमी आते हैं, जब कभी Reception होता है तो हजारों आदमियों से हाथ मिलाना पड़ता है। तो जाग्रति देती हूँ। हाथ मिलाते ही जाग्रति, उसके दिया तो खट से देखती हूँ कि जाग्रत हो गए, मुझे आती है हँसी! जिस देश में जाती हूँ उस देश में जाग्रति देती हूँ, जिससे बात करती हूँ उसको जाग्रति देती हूँ, वो बोलते रहता है मैं उसे जाग्रति दती रहती हूँ। वो बोलते रहता है...... दुनिया की चीज। जहाँ मौका मिलता है जाग्रति देती हूँ । विक्टोरिया स्टेशन पर टिकट कलेक्टर एक साहब मुसलमान, तो उस समय टिकट लेने के लिए मैं खडी थी तो लाइन बहुत लम्बी थी तो मैं देख रही थी, पाकिस्तान का होगा, पता नहीं जहाँ का भी हो, हाँ पाकिस्तान का था, तो उसको मैं जाग्रति दे रही थी खड़ी खड़ी, सामने वालों को भी जाग्रति दे रही थी। जैसे उसने टिकट दिया उसने मेरी ओर देखा और पार हो गया! तो वो सबका टिकट देकर के जो अन्दर में आ गया, और आकर मेरे कम्पार्टमेन्ट में बैठ गया। कम्पार्टमेन्ट में मैं अकेली बैठी थी। कहता है आप कौन हैं? आपमें इतनी कशिश कैसी है? मैने कहा आप कौन हैं? कहने लगा मेरा नाम हुसैन है, फिर मैने कहा बैठो हुसैन मियाँ, ऐसे हाथ करो। कहने

लगा ये क्या आ रहा है ठण्डा? आप कौन हैं? देख लो कौन हैं, पहचान लो। रोम में मैं गई थी, बहुत दिन पहले की बात है, वहाँ बहुत से आर्टिस्ट बैठे हुए थे। कुछ पेंट कर रहे थे, एक को पार दिया। वह धीरे से उठा और आके उसने धीरे से किसी से कुछ कहा और उसके बाद आकर के दोनों पैर पकड़ के बैठ गया और रोने लग गया जोर जोर से। "माँ तुम कब आए"? मैं तो वहाँ बड़े भारी अफसर की बीवी बन कर गई थी, तीन आदमी उधर में, चार आदमी उधर में खड़े हुए थे! वो लोग सब embarrased हो गए कि ये क्या कर रहा है? माँ तुम मुझे मिल गई, रात को तुम स्वप्न में आई थीं, तुमने कहा था कि मैं ऐसी साड़ी पहनकर आऊंगी, वैसी तुम पहन कर आई हो। एक क्षण भी सहजयोग के सिवाए मुझे कुछ सूझता ही नहीं है, सब पिछला भूल गई मैं। बड़े बड़े जन्म हुए, बड़े बड़े हो गए सब लोग। सब भूल गई हूँ मैं, पिछला अगला सब भूल गई हूँ।

यही सब सहजयोग ही मुझे याद है और मुझे कुछ याद नहीं। ऐसे ही आप लोगों को भी हर क्षण हर पल, सहजयोग। जहाँ बैठे हैं वहीं पर। घड़ियाँ फेंक दो पहले, उतार दो ,घड़ियाँ फेंक दो, घड़ियों की गुलामी फेंक दो, सहजयोग की गुलामी करो, सहजयोग तुम्हारी घड़ी है। साढ़े बारह बज गए उस दिन, कोई हर्जा नहीं, बैठे हुए हैं। तीन बज गए बैठे हुए हैं। सहजयोग में बैठे हैं, सहजयोग क्या Time का गुलाम है, क्या घड़ी का गुलाम है? किसी भी कायदे कानून के हम गुलाम नहीं है। हम सिर्फ सहजयोग में खड़े हुए है। कितना भी टाइम लग जाए बैठे रहेंगे। जहाँ भी बैठेंगे, बैठेंगे। हम कोई पेट के गुलाम हैं जो टाइम से खाएं ? हम किसी के भी गुलाम नहीं हैं। होते रहता है सबकुछ, होने वाली है। अपनी गुलामी पहले छोड़ो, जितनी पुरानी गुलामियाँ हैं सबको छोड़ो। पहले घड़ियों को फेंको उठा करके। System नहीं बनाओ किसी चीज का, सहजयोग में System नहीं बन सकता है। उससे अपना System बनता रहेगा, उसके System को बनने दो। तुम लोग ने System बनाया तो जड़ हो जाएगा। Discipline मत बनाओ, उसकी Discipline चलने दो अपने अन्दर में। हाँ जो लोग पार नहीं हुए हैं, उनके लिए Discipline जरूरी है, वो तुम करो। लेकिन जो लोग पार हो गए हैं उन्होने अपनी Discipline अन्दर करनी है। अपने आप अन्दर Disciplining हो जाएगा। सहजयोगी का अपना अन्दरूनी Disciplin है, वो गर Indiscipline करे तो उसकी माफी नहीं है। जो सहजयोगी नहीं है उसको माफ करो, क्योंकि वह अभी तक जानता नहीं कि Discipline क्या चीज है। उसको तो संसारी Discipline मालूम है, डण्डे वाली। सहजयोगी की अपनी ही Discipline अन्दर से आने दो, अन्दर से उसको जगने दो, देखो तुम कितने उसके Discipline में चल रहे हो, उसके हाथ पैर के साथ घूम रहे हो, उसकी लहर के साथ उठ रहे हो! समुद्र की लहर की किसने Discipline बाँधी है ? यहाँ बैठे बैठे आप London में कौन से Time High Tide आएगी, Low Tide आएगी, आप बता सकते हैं? किसने बाँधने के रखी है उसकी Discipline जो आप Discipline बाँधने लग गए? उसके Discipline में उतरना सीखो। उसके इशारे, उसके यंत्र में बंधना सीखो। उसका यंत्र चल रहा है, अपना कुछ मत बनाओ। अपना बस ये कहो कि चलो सहजयोग में उतरो, चलो लगाओ Time उसी में। घड़ियाँ लगानी है तो सहजयोग के लिए। Alarm लगाना है तो सहजयोग के लिए। ये देखिए, ये उम्र है और ये सहजयोग है! (मराठी)

संसार का एक पत्ता भी उसके Discipline के बगैर नहीं चल सकता, उसके Discipline में अपने को घोल दो, उसकी Harmony में चले जाओ। उसके साथ Harmonise कर लीजिए पूरी तरह से, जब वो उठता है तो उठ गए, जब वो गिरता है तो गिर गए। जब हम अपना कुछ नहीं करके बैठ जाते हैं तो उससे अछूते रह जाते हैं। अपने को उसी के साथ mould कर लीजिए। सिर्फ सहजयोग से उतरता है और किसी चीज से नहीं हो सकता, और कोई संसारिक लौकिक चीजों से नहीं हो सकता है उसका काम। उसका एक ही तरीका हजार बार बताया फिर से बता रही हूँ,फिर से बता रही हूँ कि आपका जो किला है, आपका जो Fortress है वो है निर्विचारिता। निर्विचारिता में जानों, वहीं जान जाओगे सबकुछ। कोई भी काम करना है निर्विचारिता में जाओ। सारा संसारिक काम निर्विचारिता में करते ही साथ में आप जानिएगा कि कहाँ से कहाँ Dynamic हो गया मामला! फूलों को खिलते हुए किसने देखा है, फलों को लगते हुए किसने देखा है? संसार का सारा जीवन्त कार्य होते हुए किसने देखा है? हो रहा है उसी Dynamism में, उसी Living चीज में आपको उतरना है। वो निर्विचारित से आ रहा है ना। उस स्थान पर आप बैठे हैं जहाँ ये सारा संसार फीका है। निर्विचारिता में ही, उसकी आदत लगाएं। हर समय निर्विचार रहने का ही प्रयत्न करें। सारा कार्य संसार का उसी से होता है और आपका भी होगा। फालतू फालतू सब चीजें हो जाएंगी।लेकिन अन्दर का चलना आपको ही करने का है। कोई उम्र वुम्र का तकाजा नहीं है कि हम बूढ़े हो गए ! कोई बूढ़ा नहीं है। अभी अभी तो पैदा हुए हैं, कितने साल हुए?दो चार साल हुए होंगे और क्या!

अभी तो छोटे छोटे बच्चे हैं सारे। उम्र का तकाजा नहीं है। निर्विचारिता में रहना चाहिए, यही आपका स्थान है, यही आपका धन है, यही आपका बल है, शक्ति है, यही आपका स्वरूप है, यही आपका सौन्दर्य है, यही आपका जीवन है। निर्विचार ,निर्विचार होते ही बाकी का जो बाहर का यन्त्र है वो पूरा का पूरा आपके हाथ में घूमने लग जाता है। निर्विचारिता में रहिए, वहाँ पर न समय है न दिशा है, न कोई छू सकता है, सिर्फ जीवंतता का दर्शन होता है कि जीवन कैसे खिलता है। इसके सौन्दर्य का दर्शन होता है, इसके सामर्थ्य का दर्शन होता है, इसके ऐश्वर्य का दर्शन होता है और इसके सत्य का दर्शन होता है। उस जगह से देखिए जहाँ से जीवन की धारा बहती है। लेकिन निर्बुद्ध बनना, महामूर्ख बनना, कैसे आपको वो दिखाएगा, या हृदय शून्य होना, प्रेम रहित होना, Selfish होना, Self Centred होना, अपने बारे में सोचना, अपने को बड़ा ऊँचा समझ लेना, वो कैसे दिखाएगा आपको मार्ग? कुरूप होना, अत्याचार करना!

सहजयोग की भी हर एक गति और Movement में भी कितना सौन्दर्य होना चाहिए! उसको करते वक्त भी उसमें कितनी श्रद्धा होनी चाहिए! कुण्डलिनी उठाते वक्त भी हाथ में कितनी धार्मिकता होनी चाहिए कि आप किसी की कुण्डलिनी, किसी की माँ का पूजन कर रहे हैं! कितना उसके प्रति आदर होना चाहिए! कितना विचार होना चाहिए! हरेक चीज में आपके Behaviour में, आपकी बातचीत में, आपके बोलने में, आपके दुलार में, आपके हँसने में, आपके रोने में, हर एक चीज में, हृदय का कितना दर्शन होना चाहिए! विशालता दिखनी चाहिए, आपके अन्दर से आकाश के दर्शन होने चाहिए, पानी की पवित्रता झलकनी चाहिए आपके अन्दर से। सूर्य की तेजस्विता आपके मुख

पर होनी चाहिए, चंद्रमा की शीतलता आपके अन्दर से बहनी चाहिए। सर्वगामी होना चाहिए आपको हवा के जैसे, सबके प्राणों में आपका प्राण स्पन्दन कर रहा है इस वक्त में, जान लीजिए। अपने प्राणों के साथ मत खेलिए। अत्यन्त श्रद्धावान और भक्ति पूर्ण, नतमस्तक होकरके उसको स्वीकार करें। जो ऊपर से नवजीवन हमारे अन्दर परमात्मा ला रहे हैं। स्वीकार्य हो उसका प्यार, उसकी अनुकम्पा स्वीकार्य हो आपको। फिर उसके लिए नहाने की जरूरत नहीं, हाथ धोने की जरूरत नहीं, कुछ करने की जरूरत नहीं, हृदय की सफाई चाहिए सिर्फ। हृदय साफ कर लो। प्रभु हमारा हृदय साफ करो, हमारा छल कपट दूर करो। अपने हृदय को साफ करो, इस हृदय कमल में उतरने वाले हैं। हृदय को साफ करो। क्या हमारा हृदय साफ है? किससे छल कपट कर रहे हो, किससे झूठ बोल रहे हो? तुम सभी एक हो, किसी एक को मेरा कहना कभी हो ही नहीं सकता है। सबके लिए कह रही हूँ कि तुम एक ही शरीर में हो और वो भी मेरे ही शरीर के अन्दर हो। मेरा ही Projection हो। मैं अपने को ही कहे दे रही हूँ, मैं दूसरे किसको कहूँ, दूसरा है ही कौन? तुम बीमार होते हो तो अन्तर से वैसी ही पीड़ा होती है जैसे कि मैं ही स्वयं बीमार हो गई हूँ, और सुखी होते हो तो अन्दर से वही आनन्द आता है जैसे कि मैं ही महासुखी हो गई हूँ। तुम लोग गर सुखी नहीं हो तो मुझे कोई सुख अच्छा नहीं लगता है। तभी रात दिन जगती रहती हूँ तुम्हारे लिए।

जो जिससे बन पड़ता है, जिसके पास समय है वो समय दे, पूर्णतया समय दे इसको। अब हमारा आश्रम बनने वाला है, उसके लिए रुपया दें जिसके पास रुपया है। देना पड़ेगा। आप इधर उध र रुपया खर्च करते हैं, क्या फायदा हुआ सारे रुपए आज तक खर्च किए? मुझको कुछ तुम्हारा रुपया नहीं चाहिए, मुझको कुछ नहीं चाहिए, मुझ पर कोई खर्चा नहीं करने का। तुम्हारे लिए आश्रम बन रहा है, तुम्हारे भाई बहनों के लिए आश्रम बन रहा है, उनको वहाँ रहना है, अभी ये बच्चे पैदा हो रहे हैं, उनके पढ़ने के लिए स्कूल चाहिए। वहाँ उन बच्चों को संभालने वाला कोई चाहिए, उसके लिए रुपया दो। बगैर रुपए के वो खड़ा कैसे होगा? तुम्हारे हृदय से यदि एक भी रुपया निकलता है तो उसका बड़ा महत्व है। ऐसे भी यहाँ पर लोग आते हैं जो एक रुपया भी नहीं खर्च करना चाहते! ऐसे भी लोग है यहाँ पर! ऐसे कोई गरीब लोग तो यहाँ हैं नहीं। ऐसे हों तो ठीक है। लेकिन एक रुपया निकालने में भी कंजूसपना करने वाले लोग भी सहजयोगी हो सकते हैं क्या ? सुनती हूँ तो मुझे आश्चर्य लगता है, एक एक रुपए के लिए परेशान करते हैं! और जिनके पास पैसा है वो रुपया दें, काफी हजारों में रुपया देना पड़ेगा, लाखों में रुपया देना पड़ेगा। किसने दिया है तुमको रुपया ? मुझको नहीं चाहिए, मुझको क्या दोगे? तुम अपने लिए तो दो भाई, अपनी भलाई के लिए दो। कल तुम्हीं लोग अपने बाल बच्चों को लेकर के इन आश्रमों में आकर के रहोगे। मुझे मालूम है। फुक्कट खोरी करने की कोई जरूरत नहीं। राजा जैसे रहो। जैसे हम फुक्कट का नहीं खाते, तुम भी नहीं खाना फुक्कट का। जो कुछ होता है करो। जिसको टाइम मिलता है Time करो, जिससे मेहनत होती है मेहनत करो, जिससे जाग्रति होती है जाग्रति करो, जिससे पार होते है पार करो, जो भूत निकालते है भूत निकालो। करो सहजयोग में। तुम्हें करना पड़ेगा, बगैर करे हुए तुम्हारा जो ego है वो मरने नहीं वाला, तुम्हारा Super Ego जो है वो भागने नहीं वाला, जबतक सहजयोग में कुछ करोगे नहीं।

फिर से आज्ञा पकडेगा। माताजी मेरा सर पकडा गया, माताजी मेरी लडकी भग गई, माताजी मेरे बाप के ऐसे होगया। होगा ही। मैं कुछ नहीं करती हूँ। गण भी कुछ नहीं करते हैं। तुम्हारी जहाँ कमजोरी आई वहाँ भूत तुमको ही पकडता है। मेरे को नहीं पकडता है। क्यो नहीं पकड़ता है मेरे को? माताजी ने हमको क्या दिया है उसको इतना दे दिया। माताजी उसको इतना दिया। अरे उसको इतना मिलने का था मिल गया उसको। तुमको जो मिला है वो कुछ कम नहीं। तुम्हारे को इसका कोई मूल्य ही नहीं है कि तुम्हें मिला हुआ है। संतोष आना चाहिए अन्दर से, पकडो अन्दर में संतोष को। उस संतोष में खड़े हो जाओ। मैं कैसे कहूँ तुमसे कि इसके भी Computers होते हैं,उसके Points होते हैं, संतोष में एक उंगली दबाओ तो संतोष जागृत हो गया। एक उंगली जब दबाओ तो आपमें Innocense जागृत हो जाएगा, एक दबाओ तो सत्य जागृत हो जाएगा। ये सब अन्दर में है आपके, ऐसे उंगलियाँ दबाने से एक सारा ProgrammSetting हो सकता है। माताजी ऐसे ही अपना करती रहती हैं। पर पहले वहाँ पर Innocense थोड़ा होना तो चाहिए, वहाँ पर संतोष होना तो चाहिए, नहीं तो उंगली दबाओ तो अन्दर से क्या निकलेगा? Vaccume? अन्दर कुछ है ही नहीं। अन्दर जिसने संतोष को जोडा है वही तो दबाने से संतोष में पहुँचे हैं, संतोष में बैठे हुए इस वक्त। धर्म में पहुँचे हुए हैं, धर्म में बैठे हुए है इस वक्त सब अपना धन जोड़ रखा है सालों साल का, शरीर जला जला करके सब आपके सामने खड़े हुए हैं! ऐसे ही आप लोग भी एक–एक चीज को जोड़ो। संतोष, संतोष। Innocense में आओ, धर्म में आओ, सत्य में आओ, सौन्दर्य में आओ प्रेम में आओ। सबके बटन हैं। कैसे होगा ? कैसे करें ? ये सहजयोग को कहना नहीं, सब होता है। कैसा शब्द ही नहीं है उसमें।जोडो। जो कमाना है सब कमा सकते हो आप अपने अन्दर में। चाहो तो संतोष कमा सकते हो, सब चीज कमा सकते हो, अपने अन्दर रख सकते हो। रखो, फिर बटन दबाओ। जो चीज चाहिए वो मिल सकती है आपको। मशीन–मशीन बन जाएगी अन्दर में। अब मैं कैसे क्या करूँ, मेरे समझ में नही आता है कि तुम्हारे अन्दर उसका उपार्जन कैसे हो? अपना उपार्जन जोडो, अपना उपार्जन जोडो, अच्छा ! (मराठी)

कुण्डलिनी और कल्कि

नवरात्रि पूजा – 28.09.1979

मुम्बई

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आपकी इच्छानुरूप आज मैं आपसे अंग्रजी भाषा में बातचीत करूंगी। हो सकता है कल भी हमें इसी विदेशी भाषा का उपयोग करना पड़े।

आज का विषय है ''कुण्डलिनी और कल्कि के बीच सम्बन्ध।'' 'कल्कि' शब्द वास्ताव में ' निष्कलंक' शब्द का संक्षिप्त रूप है। निष्कलंक का अर्थ वही है जो मेरे नाम का है अर्थात 'निर्मल' अर्थात बेदाग, स्वच्छ। कोई भी चीज, जिस पर कोई दाग धब्बा न हो, वह निष्कलंक होती है।

इस अवतरण का वर्णन बहुत से पुराणों में किया गया है कि सम्भलपुर गाँव में सफेद घोड़े पर सवार होकर यह पृथ्वी पर अवतरित होगा। वे इसे सम्भलपुर कहते हैं। अत्यन्त दिलचस्प बात है कि लोग किस प्रकार सभी कुछ शाब्दिक (Literal)रूप से लेते हैं। ''सम्भल' शब्द में ' भाल' का अर्थ है ' मस्तक' अतः सम्भल का अर्थ हुआ उसी अवस्था में अर्थात कल्कि आपके भाल पर स्थित है। भाल मस्तक है और यहीं पर वो जन्म लेंगे। शब्द सम्भलपुर का वास्तविक अर्थ यही है।

ईसा मसीह और उनके विध्वंसक अवतरण महाविष्णु, जिन्हें कल्कि भी कहा जाता है, के बीच में मानव को समय दिया ताकि वे स्वंय को सुधार सकें और, जैसा बाइबल में कहा गया है, 'अंतिम निर्णय' (Last Judgement) के समय परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर सकें। कहा गया है कि अन्तिम निर्णय के समय आपका आंकलन होगा।इसी पृथ्वी आप सबको परखा जाएगा। आज पृथ्वी पर हमेशा से अधिक जन–संख्या है क्योंकि वो सभी लोग, व्यवहारिक रूप से वो सभी जो परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं, इस आधुनिक काल में या तो जन्म ले चुके हैं या शीघ्र लेने वाले हैं। ये समय अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि सहजयोग ही अन्तिम निर्णय (Last Judgement)है। ये सुनना अत्यन्त अजीब लगता है, परन्तु यही वास्तविकता है और यही सत्य है। यद्यपि आप समझ सकते हैं कि माँ (श्रीमाताजी) के प्रेम ने आपके लिए आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना तथा भयानक अनुभव प्रतीत होने वाली अंतिम निर्णय की कहानी को अत्यन्त सुन्दर ,कोमल एव मृदु बना दिया है, इससे आपको कोई परेशानी नहीं होती ।

परन्तु मैं आपको बताती हूँ कि यह अंतिम निर्णय है और सहजयोग के माध्यम से आप सब लोगों को परखा जाएगा कि आप परमात्मा के साम्राज्य मे प्रवेश करने योग्य हैं कि नहीं।

सहज–योग में लोग भिन्न प्रकार के चित्त (Attentions) लेकर आते हैं,ऐसे लोग भी हो सकते है जिनकी वृत्ति अत्यन्त तामसिक हो,जड़ हो या उनके स्वभाव अत्यन्त आलसी और धीमें हों। उनकी यह वृत्ति जब बहुत बढ़ जाती है तो वे मृत आत्माओं के चंगुल में आ जाते हैं,उन्हें शराब की लत पड जाती है या कुछ अन्य ऐसी आदत पड़ जाती है जो व्यक्ति को वास्तविकता से दूर ले जाकर उसे जडवत कर देती है। जैसा आप जानते हैं कि मनुष्य का दूसरा पक्ष दायां पक्ष होता है। अर्थात् अत्यन्त महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति के लोग। ऐसे लोग अत्यन्त महत्वाकांक्षी होते हैं, यह पूरे विश्व को विजय करना चाहते हैं ,पूर्णतयः स्वतन्त्र (निरंकुश) होना चाहते हैं, कैंसर की तरह से विषालु। पूर्ण विराट से वे अपना संबंध नही रखना चाहते। इस कलयुग में आप देखते हैं कि किस प्रकार से लोग

अति में चले जाते हैं। कुछ बहुत अधिक शराब आदि में फंस जाते हैं अर्थात् चेतना से, आत्मा से, सच्चाई एवं सौन्दर्य से परे दौड़ने लगते हैं। कुछ अन्य जो इन सब चीजों को नकारते हैं। कुछ लोग इतने अहंकारवादी हैं कि सभी सौन्दर्यपूर्ण चीजों को नकारते हैं।

तो कुछ लोग ऐसे हैं ज़ो प्रतिअहँ ग्रस्त हैं, अत्यन्त बन्धन ग्रस्त, तामसिक एवं आलसी तथा एकदम असभ्य। दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो बहुत अधिक महत्वाकांक्षी, प्रभुत्व जमाने वाले तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं और मुकाबले की भावना से एक दूसरे को नष्ट करने वाले हैं। दोनों प्रकार से इन उत्कट(Extreme)लोगों का सहज–योग में प्रवेश कर पाना कठिन है। परन्तु जो लोग मध्य में हैं उनका सहज–योग में आसानी से समावेश हो जाएगा । इसके अतिरिक्त जो लोग कम जटिल हैं, सहज हृदय हैं, जैसे गांव के लोग होते हैं, उनका भी सहज योग में आसानी से समावेश हो जाता है और बिना किसी कठिनाई के वे सहजयोग को अपना लेते हैं। नगरों में भी ऐसी ही बात है। मस्तिष्क से किए गए इतने अधिक काम का भी परिणाम आप देखते है कि आज यहां मुश्किल से दो–तीन सौ लोग हैं। परन्तु यदि मैं किसी गांव में जाती तो पूरा गांव, पांच–छः हजार लोग वहाँ आ जाते और सभी के सभी बिना किसी कठिनाई के आत्माक्षात्कार पा लेते। यहाँ पर सभी लोग बहुत व्यस्त हैं, उनके पास पहले से ही बहुत से कार्य हैं। वो सोचते हैं कि परमात्मा को खोजने से और परमात्मा की साधना के लिए समय बरबाद करने से अधिक महत्वपूर्ण बहुत से कार्य उनके पास हैं।इन परिस्थितियों में सहजयोग सभी साधकों के हृदय में अत्यन्त नैसर्गिक रूप से यह कार्य करता है। बिना किसी कठिनाई, बिना किसी प्रयास आप अपना आत्म– साक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु जब हम कल्कि की बात करते हैं तो हमें याद रखना है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने और परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के बीच के समय में हम भटक भी सकते हैं। यह योग भ्रष्ट स्थिति कहलाती है। लोग योग को अपनाते हैं, योग में आते हैं, फिर भी अपनी प्रवृत्तियों के पाश में फंसे रहते हैं। उदाहरण के रूप में एक अहम ग्रस्त व्यक्ति या धनलोलुप मनुष्य या सत्तालोलुप व्यक्ति जो लोगों के समूह पर रोब जमाना चाहता है और जो अपने विचारों से उन पर शासन करना चाहता है, उसका पतन भी हो सकता है और सहज योग में रहते हुए भी ऐसे व्यक्ति के साथ अन्य लोगों का भी पतन हो सकता है। बाम्बे में ऐसा प्रायः होता रहा है। यह ऐसी आम बात है जो घटित होती रही है। परन्तु इसे योगभ्रष्ट स्थिति कहते हैं जिसमें व्यक्ति का योग–स्थिति से पतन हो जाता है। उसका पतन हो जाता है क्योंकि सहज–योग आपको उन्नत होने या पतन के गर्त में जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करता है। परन्तु आप यदि किसी अन्य गुरु के पास या किसी अन्य योग में जाते हैं जिसमें शुद्धि करण घटित होता है, जहाँ लोगों को बचपन से ही प्रशिक्षित और अनुशासित किया जाता है .ऐसे योगों में गुरु किसी न किसी तरह से देख लेता है कि आप जख्मी हैं, इतने बुरी तरह जख्मी हैं कि आपका किसी अन्य से कोई सम्बन्ध नहीं । किसी आपरेशन की तरह से वे उस व्यक्तित्व को निकाल कर बाहर फेंक देते हैं।

परन्तु यहाँ पर सभी कुछ आपकी स्वतंत्रता पर छोड़ दिया जाता है। आप समझते हैं कि आपको स्रोत से जुड़े रहना होगा, सामूहिकता में रहना होगा, पूर्ण के साथ जुड़ना होगा, यहाँ वहाँ, किसी ऐसे व्यक्ति के साथ नहीं, जो अन्य लोगों को वश

में करने का प्रयास कर रहा हो। सहज–योग में कोई यदि आवांछित रूप से ऊँचा उठने का प्रयास करेगा तो उसका पतन हो जाएगा। प्रकृति में आपने देखा होगा, कोई भी चीज सीमा से अधिक नहीं बढ़ती, जैसे मानव की एक विशेष ऊँचाई है, भिन्न वृक्षों की अपनी ही सीमित ऊँचाइयाँ हैं, सभी कुछ नियंत्रित है। सहज–योग में आप दिखावा बाजी नहीं कर सकते और न ही आपको कोई भिन्न समूह या कोई विशेष चीज बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। मैंने देखा है कि थोड़ा सा उन्नत होने के पश्चात् सहज योग में लोग अन्य साधकों से अपने चरण स्पर्श करवाते हैं। आश्चर्य की बात है कि ऐसे लोगों का निश्चित रूप से तुरन्त पर्दा फाश हो जाता है। सभी लोग उन्हें जान जाते हैं और चक्रों के पकड़े जाने के कारण वह बेकार हो जाते हैं। हो सकता है उन्हें चैतन्य लहरियाँ आती हों परन्तु उनका पतन होता चला जाता है, होता चला जाता है जब तक वे पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जाते। मनुष्य में घटित होने वाली यह योग–भ्रष्ट स्थिति निकृष्तम स्थिति है। पहले तो आपको योग ही नहीं प्राप्त होता और यदि योग प्राप्त हो गया और उसके बाद आप योगभ्रष्ट स्थिति में चले गए तो, जैसे श्री कृष्ण ने वर्णन किया है, आप राक्षस योनि में चले जाते हैं।

सहज–योग में आने वाले सभी लोगों को यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि उन्हें एक ही स्थिति में स्थापित रहना चाहिए अन्यथा और कौन सी योनि बच जाती है? योग प्राप्ति बिना यदि आपकी मृत्यु हो जाती है तो हो सकता है कि आपका पुनर्जन्म हो जाए, हो सकता है। निःसन्देह यह जीवन तो व्यर्थ हो ही जाएगा।

परन्तु सहज–योग में आकर यदि आप ऐसी चालाकियाँ करने का प्रयत्न करते हैं या लोगों को इस बात से प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं कि आप बड़े महान् साक्षात्कारी आत्मा हैं या आपने यह उपलब्धि पा ली है, वो उपलब्धि पा ली है, यह सारी चीजें जो आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने से पहले भी किया करते थे, तो यह अत्यन्त गम्भीर अपराध है और इसका दण्ड आपको अवश्य मिलता है। यह कल्कि की शक्ति गुप्त रूप से सहज–योगियों के पीछे से कार्य करती रहती है। उदाहरण के रूप मे एक महिला मुझे मिलने आई, वह मेरे विषय में कुछ लेख छापना चाहती थी, किसी दुष्ट ने पैसे देकर उसे मेरे पास भेजा था। उसने मेरे विषय में कुछ उल्टी सीधी ऐसी चीजें छापी जो मैंने कभी की ही नहीं थीं। इनके कारण सभी लोग बहुत नाराज हो गए और कहने लगे श्रीमाताजी आप अवश्य उसे दंडित करें, उसे कचहरी मे घसीटें, उसके विरुद्ध मान–हानि का दावा करें, आदि आदि। मैंने कहा कि मैं कचहरी नहीं जाऊँगी, कृपा करके आप लोग जाएं, ऐसे विचार त्याग दें। परन्तु कोई मेरी बात सुनने को तैयार न था। हुआ यह कि वह अखबार साढ़े तीन महीनों के लिए बन्द हो गया और उन्हें बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। निःसन्देह यह सब मैंने नहीं किया था, जहाँ तक माताजी निर्मला देवी का प्रश्न है। यह सारा कार्य कल्कि ने किया था।

ग्यारह शक्तियाँ सहज–योग के सौन्दर्य की रक्षा कर रही हैं, कोई भी यदि सहज–योग से खिलवाड़ करने का प्रयत्न करे तो उसे बुरी तरह से कष्ट होता है। तो आज का दिन आपको यह बताने का है कि परमात्मा से खिलवाड करने में कितने खतरे हैं। अभी तक लोग उन पर अपना अधिकार मानते थे।लोगों ने ईसा–मसीह जैसे व्यक्ति को भी सताया। बड़े बड़े संतो को भी सताया गया। हमेशा मानव को कष्ट दिए गए और मैं अपने हर भाषण में

यह चेतावनी देती रही कि आज भी आप वही चालाकियां न करते रहें क्योंकि कल्कि गतिशील हो चुके हैं। अतः किसी भी सन्त को , किसी भी सज्जन व्यक्ति को कष्ट देने का प्रयत्न न करें। इस बारे में सावधान रहें क्योंकि कल्कि गतिशील हैं और यह शक्ति एक बार यदि आप पर कुपित हो गई तो आपको छुपने की जगह नहीं मिलेगी। यह बात मैं केवल सहज–योगियों से नहीं कह रही हूँ, पूरे विश्व से कह रही हूँ कि सावधान हो जाए,दूसरों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न न करें, उनका नाजायज लाभ उठाने का प्रयत्न न करें, अपनी शक्ति दर्शाने का प्रयत्न न करें क्योंकि आपके जीवन में यदि एक बार यह विनाश शुरु हो गया तो आपको समझ नहीं आएगा कि इसे कैसे रोकें।

मेरे ख्याल से पहले भी मैनें आपको बताया था कि एक बार मैं आंध्र–प्रदेश गई थी। वहां मैनें लोगों से कहा कि अब आप तम्बाकू उगाने बन्द कर दें। सभी मेरे से बहुत नाराज हो गए क्योंकि उनके विचार में तो यह उनकी जीविका थी। तम्बाकू से वे नोट छाप रहे थे और उस धन से सभी प्रकार के पाप कर रहे थे। मैने कहा कि संसार में आप अपने सिर पर इतने सारे पाप कर्म लादने के लिए नहीं आए,आप तो अपने पापों को धोने के लिए,पापाक्षालन करने के लिए आए हैं। अपने पापों को बढ़ाने के लिए नहीं आए हैं, उन्हें धोने के लिए आए हैं। यह पापों से मुक्ति पाने का समय है। यही कारण है कि मैं निर्मल बन कर आपको पाप मुक्त करने के लिए आई हूँ। पर आप तो अपने पापों को बढ़ाए चले जा रहे हैं। यह तम्बाकू उगाने से आपको क्या लाभ होगा? परन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी इसके बाद अपने तीन प्रवचनों में, यह रिकार्ड किए गए हैं, लोग कहते हैं कि मैंने उनसे कहा था कि सावधान हो जाओ, बीज के अन्दर निहित कल्कि आपको थोडा सा वक्त देगा। परन्तु एक बार यदि वह गतिशील हो उठा तो–आप जानते हैं आंध्र में क्या हुआ। मौर्वी में भी ऐसे ही हुआ। पहले साल ही मौर्वी के कुछ लोग मुझसे मिले, मौर्वी के कुछ बड़े –बडे आदमी। यह सब एक ऐसे भयानक सन्त में विश्वास करते थे जो इतना दुष्ट था कि उसने परिवारों के परिवार नष्ट कर दिए।मैने उनसे पूछा कि क्यों तुम इस व्यक्ति को मानते हो ? यह तो आपका चित्त भौतिक चीजों की तरफ ले जा रहा है। क्यों आप इसमें विश्वास करते हैं ? मौर्वी में हर घर में इस दुष्ट बाबा का चित्र था और जब मैनें उन्हें बताया तो वह मेरी बात सुनने को तैयार न थे। उन्होंने सोचा कि मैं उन्हें इसलिए चेतावनी दे रही हूँ क्योंकि मुझे उस तथाकथित सन्त से ईर्ष्या है। आप जानते है मौर्वी में क्या घटना हुई, यह सच्चाई है।

यह सभी बातें अन्य लोगों के सम्मुख की गई थीं ताकि लोग इस बात को जान लें कि किस स्थान पर क्या घटित हुआ, उसके बारे में माताजी ने बता दिया था। इससे पूर्व दिल्ली में मैं वृंदावन के कुछ लोगों से मिली थी ,उन्होंनें मुझे वहाँ के पण्डे तथा अन्य चीजों के बारे में बताया। मैने उन लोगों से कहा आप अपना यह पेशा त्याग दें, आप कितने भयानक लोग हैं! परमात्मा के नाम पर पैसे बनाने वाले आप कौन होते हैं? यह सभी पंडित और पण्डे और ऐसे सभी लोग समाज का रक्त चूसने वाले भयानक कीड़े हैं। तुम लोग अपने धन्धे छोड़ दो। गंगा नदी के कारण तुम जो पैसा कमा रहे हो, वही गंगा नदी एक दिन तुम्हें पूरी तरह से नष्ट कर देगी। गंगा और यमुना में जब बाढ़ आई तो मैं लन्दन में थी। दूरदर्शन पर मैने इन पांडों को अपने खोमचे और बाकी का सामान सिर पर लादकर दौड़ते हुए देखा।

निःसंदेह इन दुष्टों के साथ जब आप सहयोग करेंगे, इनके साथ जब आप रहेंगे, तो आप भी दुखी होंगे। अबोध लोग ही कष्ट उठाएंगे।क्यों हमें ऐसे लोगों से प्रभावित होना चाहिए? ऐसा करने की कीमत तो आपको चुकानी होगी। उनसे प्रभावित होकर आप उनके सहयोगी बन जाते हैं और कहते हैं,' चलो कोई बात नहीं। ' हम वहां जा रहे हैं तो इसको कुछ दे ही दें। यह हमारे पूर्वजों का पंडा भी बैठा है गंगा नदी के सम्मुख, यह पैसों की भीख मांग रहा है। कल्पना करें कि प्रेम और आनन्द की दाता गंगा नदी बह रही है और यह दुष्ट अपनी पीठ उसकी ओर करके बैठे हुए हैं और आपसे पैसे मांग रहे हैं! कितने मूर्ख है यह लोग, कितने बेकार और जाहिल! और आप हैं कि उन्हें पैसे देते हैं और सोचते हैं कि उन्हें पैसे देकर आपने पुण्य का काम किया है। हम इसी प्रकार का जीवन बिताते रहे हैं, सत्य और असत्य को समझे बिना सहयोग किए चले जाने का। एक ओर तो हमें देश में तथा विश्व भर में होने वाले, विशेष रूप से इस देश में होने वाले, सभी कुकर्मों में पूर्ण अंधविश्वास है। हम अत्यन्त अबोध लोग हैं जिनमें भावुकता का बाहुल्य है। यह बात सत्य है, परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं कि हम मूर्ख एवं जाहिल बन जाएं। उदाहरण के रूप में उस दिन अवध गांव की एक सभा में मैने कहा था कि विट्ठल के मंदिर में बाधावी कहलाने वाले इन लोगों को अच्छी तरह से दंडित किया जाना चाहिए क्योंकि लगातार कई दिनों तक पैदल चल कर वहाँ आने वाले सन्तों से जो दुर्व्यवहार वो करते हैं, इसके बारे में अवश्य कुछ किया जाना चाहिए। मैने जब यह बात कही तो सभी लोगों को कुछ नाराजगी हुई क्योंकि इन बेचारे लोगों के लिए राक्षस रूपी यह बाधव कुछ महान् चीज हैं। हजारों मील चलकर उनके पास आने वाले सन्तों के यह सिर फोड़ देते हैं। उनके सिर को यह ऐसे फोड़ते हैं मानो नारियल को फोड़ रहे हों। बेचारे सभी सिर के दर्द से कराहते हैं। इन सादे अबोध लोगों पर यह इतना अत्याचार करते हैं तो क्या आपके विचार से मुझे इनको उचित ठहराना चाहिए? मैं तो सत्य, धर्म और दया पर खड़ी हूँ। जब मैने यह कहा तो कुछ लोग जिनके अपने हित निहित थे, हो सकता है वो इन बाधावों के संबंधी रहे हों या जो भी हो, मुझसे नाराज हो गए। परन्तु परमात्मा का शुक्र है कि तीन महीनों के अन्दर सरकार ने वहाँ का सभी कुछ अपने अधिकार में ले लिया था।

हम लोगों के लिए यह बात इतनी सामान्य है कि हमारी आँखों के सम्मुख चीजें घटित होती रहती हैं फिर भी हम मंदिरों में परमात्मा के नाम पर वही सब कुछ किए चले जाते हैं, पाप के बाद पाप किए चले जाते हैं। पापों को स्वच्छ करने और अपने विकसित मस्तिष्क से उन्हें समझने के स्थान पर हम अपने पूर्व पापों में और पाप जोडते चले जाते हैं। पापों में और पाप जोडते ही चले जाते हैं। ऐसे लोग जो अपने मस्तिष्क का उपयोग ही नहीं करते, वे मूढ़ बुद्धि हैं। किसी के भी सम्मोहन, प्रभाव या चमत्कारिक गतिविधियों........ जैसा पश्चिमी देशों में है .... को देखकर लोग उनके सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं और यह चमत्कार करने वाले इनसे हज़ारों रुपये ऐंठ कर मिर्गी और आधे सिर दर्द (Epilepsy, Migraine) रोग उनके गले डाल देते हैं। यदि यह न दिए तो पागलपन तथा अन्य बिमारियाँ दे देते हैं। परन्तु लोग पागलों की तरह से इन चमत्कारिक गतिविधियों के पीछे दौड रहे हैं और अपने विनाश को बढ़ावा दे रहे हैं, और किए हए अपराधों के ढेर को स्वच्छ करने की अपेक्षा उन्हें बढ़ाए चले जा रहे हैं।

इस बार हमें अत्यन्त बहुमूल्य समय प्राप्त हुआ है और व्यक्ति को अपने विषय में अत्यन्त सावधान रहना है। स्वास्थ्य के मामले में व्यक्ति को किसी और पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, उसे परमात्मा के साम्राज्य में अपना विश्वास स्थापित करना चाहिए और सर्वशक्तिमान् परमात्मा के हृदय में उच्चतम स्थान प्राप्त करना चाहिए क्योंकि जब कल्कि आएंगे तो वे इन दुष्टों को अत्यन्त बेरहमीपूर्वक काट डालेंगे। उनमें करुणा का पूर्ण अभाव है,ग्यारह रुद्र उनमें निवास करते हैं,अर्थात् विध्वंसक शक्तियां उनमें पूर्णतः स्थापित हैं । जब मैं यह सब कुछ देखती हूँ, क्योंकि मैं यह सब कुछ देख सकती हूँ, मुझमे एक अपात स्थिति का अहसास आ जाता है और फिर मैं बताती हूँ कि इससे सावधान हो जाओ, इस शक्ति से बचो, इसके साथ खिलवाड़ मत करो ,इसे सहज मत मानो और दुष्ट लोगों के साथ तालमेल मत करो,सत्य पर डटे रहो। अन्यथा कल्कि के आने का दिन बहुत समीप है।

एक अन्य प्रकार के लोग हैं जो अपनी बुद्धि का कोई अन्त नहीं देखते, उन्होंनें परमात्मा को नकार दिया है, वो कहते हैं 'कहां है परमात्मा? कोई परमात्मा नहीं है, हम परमात्मा पर विश्वास नहीं करते।' यह सब पागलपन है, विज्ञान ही सभी कुछ है । विज्ञान ने अभी तक क्या किया है? आइए इसे देखते हैं कि विज्ञान नें हमारे लिए क्या किया है। अभी तक तो विज्ञान ने हमारे लिए कुछ नहीं किया है, इसने केवल मृत कार्य किया है, आपको अहंकारी बनाया है,पूरा पश्चिम अंहकार चालित हैं। वो अपराध करने के नए–नए तरीके खोज रहे हैं कि किस तरह बुरे से बुरा अपराध किया जाए। वो इसके मार्ग खोज रहे हैं और भारत में कुछ ऐसे गुरु हैं जो उन्हें इसके लिए ज्ञान उपलब्ध करा रहे हैं कि किस प्रकार अधम से अधम पाप किया जाए। तो ऐसे लोग मात्र दो छलांगों में असानी से नरक में जा सकते हैं।

जो गलत है वो गलत है, चाहे आज हो, आने वाले कल में हो या बीते हुए कल मे हो या हजारों वर्ष पहले हो। आपके धर्म और पुष्टि के लिए जो गलत है वो गलत है। मूर्खता यह है कि लोग कहते हैं इसमें क्या दोष है, उसमें क्या दोष है ? इस प्रश्न का उत्तर केवल कल्कि देंगे। मैं तो आपको केवल यह बता रही हूँ कि यह गलत है, बुरी तरह गलत है। यह आपके उत्थान के विरोध में है, आपके अस्तित्व के विरोध में है। बाद में आपके पास पछतावा करने के लिए और यह पूछने के लिए कि," इसमें क्या दोष है," समय न होगा। आपका दम घोंट दिया जाएगा। कल्कि का अवतरण ऐसा है। जैसा कहा जाता है, वे सफेद घोड़े पर सवार होकर आएंगे।

इतनी आश्चर्यजनक शक्ति कार्यान्वित होने वाली है। सभी मनुष्यों को परखा जाएगा, तब कोई भी खिलवाड न कर सकेगा। आप देखें किस प्रकार सभी चीजों का विज्ञापन हो रहा है, सभी कुछ छापा जा रहा है। विज्ञान द्वारा बनाया गया यंत्र भी (Microphone) सहजयोग के प्रचार के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसे यदि मैं अपने चक्रों पर ले लूँ तो आपको चैतन्य लहरियाँ मिलती हैं और आत्म–साक्षात्कार प्राप्त होता है पूरा विज्ञान सहजयोग की हजूरी में है। उस दिन जैसे दूरदर्शन के कुछ लोग आए थे। उन्होंने ने कहा, 'श्रीमाताजी हम आपकी दूरदर्शन फिल्म बनाना चाहते हैं।' मैने कहा इस कार्य को करने से पहले सावधान हो जाना। मुझे कीर्ति की आवश्यकता नहीं है। जो भी कार्य आप करो उसे अच्छी तरह से करना। दूरदर्शन के माध्यम से हम सहज–योग दे सकते हैं। मान लो कि टी.वी के पर्दे पर मैं हूँ तो मैं लोगों से कह

सकती हूँ कि अपने हाथ मेरी ओर करें और इस प्रकार से हजारों लोगों को केवल टी.वी देखते हुए आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। यह वास्तविकता है। इसके विषय में क्यों आपको नाराज होना चाहिए? क्यों नहीं आकर आप इसे परखते ? क्यों आपको आघात पहुँचना चाहिए ? मैं यदि ऐसी हूँ तो इससे आपके अहँ पर क्यों चोट आनी चाहिए ? आप यदि मेरे से भिन्न हैं तो इससे मुझे कोई चोट नहीं पहुँचती! आप जब कहते हैं कि हमें फलां –फलां कार्य आयोजित करना है तो मुझे बुरा नहीं लगता, तो यदि कोई अन्य परमेश्वरी व्यक्तित्व का है तो आपको बुरा क्यों लगना चाहिए?

ईसा–मसीह यदि दिव्य व्यक्ति हों तो आपको क्यों बुरा लगा? क्यों आपने उनका कत्ल कर दिया? क्यों आपने उनकी हत्या कर दी? इतने इतने महान् संतो को क्यों आपने सताया? आप तो अत्यन्त बुद्धिमान एवं मधुर थे! क्या ये बात ठीक नहीं है? आप लोग अत्यन्त करुणामय एवं अच्छे लोग हैं जो सभी प्रकार के गलत, व्यर्थ एवं भ्रमित करने वाली चीजों के पीछे दौड़ रहे हैं। बहुत से लोग आपको भ्रमित करने के लिए आए और आपको पथ भ्रष्ट करने के लिए आपसे धन ले रहे हैं। पाप देने के बदले वे आपसे पैसा ऐंठ रहे हैं। नरक यात्रा के लिए ये आपका नाम दर्ज कर रहे हैं। उनके अपने नाम भी इसमें लिखे हुए है। जब मैं उनके नाम लेती हूँ तो लोगों को बहुत आघात लगता है कि क्यों श्रीमाताजी इन गुरुओं के विरूद्ध बोलती है! वे गुरु नहीं हैं। वो तो राक्षस हैं।

एक बार ईसा–मसीह खड़े हो गए और कहा कि इन राक्षसों और इनके बच्चों को नरक में जाना होगा। तब लोग उनके पास गए और कहा कि "क्यों तुम इनके विरुद्ध यह सब कहते हैं?" एक दूसरे के विरुद्ध वो कुछ नहीं कहते। ईसा–मसीह ने कहा था कि शैतान (Satan) अपने घर के विरुद्ध कुछ नहीं बोलेगा। एक दूसरे से उनकी बड़ी अच्छी मित्रता है। परस्पर उन्हें कोई समस्या नहीं। एक दूसरे के प्रति वे अत्यन्त करुणामय हैं, शिष्यों में भी वे धन बांटते हैं, आप ये ले जाओ और मैं ये ले लूंगा और हम सभी सीधे नरक में जाएंगे। अच्छी तरह से यह आयोजित है। जैसे एक रेलगाड़ी पहले जाती है, फिर दूसरी छुटेगी और फिर तीसरी। इस प्रकार की महत्वाकांक्षा ,इस प्रकार के अहंकार, धन लोलुपता, इसका दूसरा पक्ष है। हर समय हम इसी पैसे में ही व्यस्त रहते हैं। मैं इसे भ्रम कहती हूँ– मतिभ्रम (Hallucination) कहती हूँ। एक अन्य भ्रांति जो आपमें है वो है आपका प्रेत–आत्माओं के पीछे, मृत लोगों के पीछे भागते रहना। यह दो मृगतृष्णाएं हैं जिनके पीछे आप दौड़ते हैं । पैसे से आप क्या प्राप्त करने वाले हैं? किसी अतिधनी व्यक्ति के पास जाकर स्वयं देखें। जाएं और देखें कि क्या वह व्यक्ति प्रसन्न है?

उसके जीवन का क्या विश्लेषण है? ऐसे किसी तथाकथित सफल व्यक्ति के पास जाकर उसे देखें कि उनकी सफलता क्या है? कौन उनका सम्मान करता है? ज्यों ही वह पीठ मोड़ते हैं,लोग कहते हैं, "हे परमात्मा! मैने किसका चेहरा देख लिया? मुझे जाकर अपना मुँह धो लेना चाहिए।" क्या आप मंगलमय हैं? आपको देखकर किसी का कुछ हित होता है, किसी का कुछ शुभ होता है? क्या आप कल्याणमय हैं? आपका व्यक्तित्व कैसा है? । स्वयं अपना निर्णय करें और वह आंकलन यहां सहज–योग में हो सकता हैं।

सहज–योग में हमारे पास एक रोगी आया,कहने लगा श्रीमाताजी मैं एक युवा लड़का हूँ न जाने मुझे क्या हो गया है कि मैं अमंगलमय (अशुभ) हो गया हूँ। मैने कहा, "तुम कैसे जानते हो?" कहने लगा

जहां भी मैं जाता हूँ पति–पत्नी में झगडा हो जाता है, बच्चों को कोई तकलीफ हो जाती है, वो रोने चिल्लाने लगते हैं। अब लोग मुझसे घृणा करने लगे हैं। लोग कहते हैं कि मुझमें कोई दोष है। मैने उस बच्चे के बारे में पता लगाया कि मामला क्या है और वह बच्चा ठीक हो गया। अब उसमें से अत्यंत सुन्दर चैतन्य लहरियाँ बहती हैं। आपमें से अत्यन्त नकारात्मक लहरियाँ भी निकल सकती हैं। अनजाने में हो सकता है आप अपराध किए चले जा रहे हों। फिर भी आप कह सकते हैं, "श्रीमाताजी मुझे चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" ऐसे लोग हमेशा स्वयं को और अन्य लोगों को धोखा देते हैं "बहुत बढ़िया, मुझमें कोई कमी नहीं। मेरी स्थिति प्रथम दर्जे की है, मेरी चैतन्य लहरियाँ सर्वोत्तम हैं और मैं बहुत अच्छी तरह से बढ रहा हूँ। आपका आंकलन कौन करेगा? यह आपका कार्य है! दूसरों के साथ आप क्या करते ? हाल ही में हमारे यहाँ ऐसा एक पादरी (Bishop) था। मैंने देखा कि जिस भी व्यक्ति ने उस भद्र पुरुष को छुआ था उसका बायाँ स्वाधिष्ठान बुरी तरह से पकड गया था। मैंने जब यह बात बताई कि इस व्यक्ति को इतना महत्व देना गलत था तो सभी मेरी जान के पीछे पड़ गए।

एक सहजयोगी डाक्टर मुझसे मिलने के लिए आया। उसका आठ वर्ष का बच्चा भी आया, वो बहुत अच्छा लड़का था, आत्साक्षात्कारी था परन्तु उसका स्वाधिष्ठान बहुत खराब था। तो मैने उससे पूछा क्या यह व्यक्ति आपके घर आता है? उसने कहा हाँ, श्रीमाताजी वो प्रायः हमारे यहाँ आता है। मेरी चेतावनी के बावजूद भी वह व्यक्ति उनके घर पर जाता और वे लोग उसका मनोरंजन करते, यह नहीं बताते कि तुम श्रीमाताजी के पास जाकर अपने को स्वच्छ करा लो। वास्तव में वे उस व्यक्ति के जाल में फंस गए हैं उससे सम्मोहित हैं। मैने उनसे पूछा कि क्या ये व्यक्ति आपके घर आता है? उसने उत्तर दिया हाँ। मैने कहा ठीक है, जाकर उसे वैसे ही जूते लगाने की क्रिया करो, वैसा करो जैसा हम सहज–योग में करते हैं। इस प्रकार से उस लड़के का चक्र ठीक हो गया। क्या आप अपने परिवार, अपने बच्चों और सभी सदस्यों को केवल इसलिए नष्ट करना चाहते हैं क्योंकि आप किसी सम्मोहित करने वाले व्यक्ति को मानते हैं?कम से कम इस बात को तो सोचो। ऐसे बहुत से लोग हैं। परन्तु सहज–योग को छोड़ देना बहुत आसान है,लन्दन में भी ,मैं जानती हूँ कि कौन कहाँ जाता है और क्या करता है। मैं उनसे कहती हूँ कि ऐसा मत करो, ऐसा बिल्कुल मत करो, मुझे कुछ नहीं लेना देना। तुरन्त आपको समझ जाना चाहिए कि हमारी माँ जो सभी कुछ जानती हैं, वो जानती है और उन्होंने हमें बताया है,यही कार्य हमें करना चाहिए। इसके बारे में बहस नहीं करनी चाहिए। क्या बहस मोबाहिसा करके आपको चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हुई थीं ? परन्तु सहज–योग में लोग गलतियाँ करते हैं और यह अत्यन्त निकुष्टतम कार्य है क्योंकि योगभ्रष्ट लोग निकृष्टतम होते हैं, वो कहाँ जाएंगे। यहाँ उपस्थित सभी सहज योगियों को मैं चेतावनी देती हूँ कि सहज–योग अंतिम निर्णय (Last Judgement) है।आपका केवल निर्णय ही नहीं होगा, आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करेंगे। आप परमात्मा के नागरिक बन जाएंगे, यह ठीक है। परन्तु इसके अतिरिक्त आपमें यहाँ होने की योग्यता है, चाहे आपका समर्पण पूर्ण है या नहीं ,परमेश्वरी नियमों की समझ आपको है या नहीं। आप चाहे भारत के नागरिक हों परन्तु यदि आप गलतियाँ करेंगे,गैर–कानूनी कार्य करेंगे तो आपको दंडित किया ही जाएगा। इसी प्रकार आप

चाहे परमात्मा के साम्राज्य नागरिक बन जाएं तो भी आपको अत्यन्त–अत्यन्त सावधान होना पड़ेगा।

दूसरी बात जो मैं आपको बताना चाहूँगी वह है कल्कि की विध्वंसक शक्तियों के विषय में। आज का प्रवचन आपके लिए बहुत तेज है क्योंकि जिस अवतरण के बारे में आपने मुझे बोलने के लिए कहा है वह भी अत्यन्त उग्र है, उग्रतम। कृष्ण अवतरण भी हुए, जिनमें हनन शक्ति थी,उन्होने कंस और बहुत से राक्षसों का वध किया।

बचपन में ही उन्होंने पूतना तथा बहुत से राक्षसों का वध किया, परन्तु उन्होंने लीला भी की। उन्होंने प्रेम किया और लोगों को क्षमा भी किया, रियायतें भी दी।

परन्तु ईसा–मसीह क्षमा की प्रतिपूर्ति हैं। ईसा–मसीह की क्षमा उनके अंतःस्थित सहनशीलता (Sustenance) के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।यदि हम उनकी क्षमा का मूल्य न समझ पाए तो वो फट पड़ेगें (कुपित हो जाएंगे) उनकी क्षमा विध्वंस बन कर हम पर गिर सकती है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि मेरे विरुद्ध यदि कुछ कहा गया तो उसे सहन कर लिया जाएगा परन्तु (HOLY GHOST) के विरुद्ध यदि एक भी शब्द बोला गया तो उसे बर्दाश्त् नहीं किया जाएगा। यह बात उन्होंने स्पष्ट रूप से कही है। अब आपने इसे समझना है। HOLY GHOST आदि शक्ति हैं। व्यक्ति को यह बात समझनी है कि ऐसे अवतरण का आना बहुत समीप है और श्रीकृष्ण की सभी शक्तियाँ उन्हें दी गई हैं जो कि हनन शक्तियाँ हैं। ब्रह्मदेव की शक्तियाँ भी, जो कि हनन शक्तियाँ है, उन्हें दी गई हैं, शिव की शक्तियाँ, तांडव जिसका एक हिस्सा है, भी उन्हें दी गई हैं। श्री भैरव की शक्ति, इसे आप भी जानते हैं कि श्री भैरव के पास क्या है, उनके पास हनन शक्ति के प्रतीक के रूप में तलवार जैसा एक शस्त्र (खंडा) है और श्री गणेश के पास फरसा है और श्री हनुमान जी की हनन करने वाली नव सिद्धियाँ भी उन्हें दी गई हैं। श्री बुद्ध की सारी क्षमाशीलता और श्री महावीर जी की अंहिसा भी बिल्कुल उल्ट जाएगी।यदि हम सहज–योग से अलग हो गए और जब हमें पूरी तरह से निकाल फेंका गया तो यह सारी ग्यारह शक्तियाँ हम पर टूट पड़ेंगी और अंतिम हनन उन्हीं के द्वारा किया जाएगा।

काश की यह हनन तक ही सीमित रहे क्योंकि ये एक सामान्य हनन की तरह से नहीं होगा जैसा देवी ने किया था। देवी ने तो हजारों वर्ष पूर्व केवल राक्षसों का हनन किया था। परन्तु वो सारे राक्षस एक बार फिर जीवित हो उठे हैं।

अब समस्या बिल्कुल भिन्न है आपको चाहिए कि इसको समझने का प्रयत्न करें। कृष्ण के समय में, प्राचीनकाल में जब श्रीकृष्ण ने कहा," विनाशायः च दुष्कृताम्, परित्राणाय च साधुणाम" तो इस कथन को समझना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि दुष्ट प्रवृत्तियों एवं नकरात्मक शक्तियों को समाप्त करने के लिए और सन्तों की रक्षा करने के लिए मैं युग –युग में अवतरित होता हूँ (सम्भवामि) बार–बार मैं पृथ्वी पर अवतरित होता हूँ। परन्तु कलयुग की समस्या यह है कि इस युग में न तो कोई पावन सहज साधु है और न ही राक्षस । बहुत से राक्षस, लोगों के मस्तिष्क में घुस गए हैं। आप बहुत से गलत लोगों का,गलत कार्य करने वालों का, राजनीति, धर्म, विकास और शिक्षा आदि के नाम पर गलत कार्य करने वाले बहुत से लोगों का पक्ष लेते हैं। एक बार जब उनका पक्ष लेते हैं तो वे आपके मस्तिष्क में प्रवेश कर जाते हैं। वो आपके अन्दर होते हैं और जब तक वे आपके अन्दर हैं उन्हें कैसे नष्ट किया जाए? वे आपके अन्दर हैं, हो सकता है

आप अच्छे व्यक्ति हैं और फिर भी आप नष्ट हो जाएं क्योंकि आपने इन लोगों को, इन दुष्टों को अपने मस्तिष्क में भरा हुआ है। अतः इस चीज का कोई स्थायी मापदंड नहीं है कि कौन वास्तव में दुष्प्रवृत्ति है और कौन सच्चा सन्त। केवल सहज–योग ही आपको स्वच्छ करके पूरी तरह से सकारात्मक, सकारात्मक रूप से अच्छे और धार्मिक बना सकता है। एक मात्र यही तरीका है क्योंकि आपका अंकुर जब आत्मसाक्षात्कार देना शुरु करे तो अपनी आत्मा का एहसास होने लगता है, अच्छी आत्मा को आप महसूस करते हैं और उस आत्मा के साथ आप समझते हैं कि आप आत्मा हैं, मृगतृष्णा (Mirage)नहीं। उस आत्मा का आप आनन्द लेने लगते हैं और एक बार जब आत्मा का आनन्द लेने लगते हैं तो आप उन सभी चीजों को त्याग देते हैं जिनकी वजह से आपको समझौता करना पड़ता है, जिसके कारण आप भयानक मिश्रित व्यक्ति बन जाते हैं। यह सारा भ्रम दूर हो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि हमें सहजयोग को अत्यन्त समर्पित होकर अपनाना है और स्वयं को और अपने सभी जानकारों को दुष्प्रवृत्ति मुक्त कर सकते हैं। यही एकमात्र उपहार है जो हम अपने मित्रों, संबंधियों तथा आस–पास के व्यक्तियों को दे सकते हैं। लोग अन्य लोगों को रात्रि भोजों तथा शराब की पार्टियों आदि के लिए निमंत्रित करते हैं। इस प्रकार आप उन्हें क्या देते हैं? कुछ नहीं। वे जन्म दिवस में उपहार देते हैं, एक दूसरे के पास जाकर पुष्प मालाएं पहनाते हैं और मंगलकामनाओं का आदान–प्रदान करते हैं। लन्दन में ईसा–मसीह के जन्म दिवस के अवसर पर मंगलकामना पत्रों का इतना बड़ा ढेर लगता है कि क्रिसमस से दस दिन पहले से ही कोई अन्य पत्र डाक द्वारा नहीं भेजा जा सकता और ईसा–मसीह के जन्म के दिन सभी लोग शराब पीने के लिए जाते हैं। यह लोग इतने मूर्ख हैं कि किसी की यदि मृत्यु हो जाए तब भी ये लोग शैम्पेन पीते हैं। शैम्पेन उनका धर्म है और व्हिस्की उनकी कुण्डलिनी। कैसे वे परमात्मा को समझ सकते हैं जबकि उन्होंने परमात्मा को अपने मिथ्या विचारों के अनुरूप बनाया हुआ है!

माँ होने के नाते मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि सावधान हो जाएं। अपनी आत्मा से खिलवाड़ मत करो। पतित न हों,उन्नत हों, आगे बढ़ें, मैं यहाँ आपकी सहायता के लिए हूँ । आप जानते हैं कि मैं दिन–रात आपके लिए कार्य करने के लिए हूँ। आपके लिए मैं बहुत परिश्रम करती हूँ, आपकी सहायता करने के लिए मैं कोई भी कसर नहीं छोड़ूंगी, और आपको ठीक करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करूंगी ताकि आप अन्तिम निर्णय की इस परीक्षा को पास कर लें। परन्तु इसके लिए आपको मुझे सहयोग देना होगा तथा अपना अधिकतर समय तथा सभी श्रेष्ठ एवं महान् गुणों को आत्मसात करने के लिए अपना सारा समय समर्पित करना होगा। कल्कि बहुत बड़ा विषय है, आप अगर कल्कि पुराण को देखें तो जानेंगे की कितनी मोटी पुस्तक है। निःसंदेह बहुत सी व्यर्थ की चीजें भी हैं, परन्तु समय आने पर हम कहते हैं कि यह जीवन्त प्रकिया हैं। कार्य जब समाप्त हो जाएगा और जब हम यह समझ लेंगे कि पंक्ति में खड़े होने के लिए अब कोई स्थान बाकी नहीं है तो कल्कि अवतरित हो जाएंगे। देखना है कि कितने लोग इस कार्य को करते हैं क्योंकि इसकी भी सीमा है । अतः मेरी प्रार्थना है कि बाहर निकलो, अपने मित्रों को संबंधियों को और पड़ोसियों को तथा अन्य सभी लोगों को बुलाओ।

यहां नवरात्रि के कार्यक्रम का कल अन्तिम दिन है, माँ की तरफ से कल थोड़ा सा समारोह

भी मनाया जाएगा। मेरे लिए महानतम समारोह तब होगा जब मुम्बई में मुझे सहज–योग को गंभीरतापूर्वक अपनाते हुए बहुत से आत्मसाक्षात्कारी लोग दिखाई देंगे।

सहज–योग में आने के पश्चात् पीठ पीछे छुरी, तुच्छता, परस्पर क्रोध करना आदि नहीं होना चाहिए। संवेदन एवं विवेकशील बनना चाहिए। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि जिन लोगों को राष्ट्र का गर्व होना चाहिए था वही परिष्कृत (Sophisticated) लोग भी इतने संकीर्ण बुद्धि एवं व्यर्थ हैं! यह सारी चीजें मुझे इसलिए बतानी पड़ रही हैं कि मेरे सम्मुख आपात स्थिति की तरह से चीजें आ रही हैं।

मैं प्रार्थना कर रही हूँ कि यह सब कुछ बम्बई में आरम्भ होना चाहिए। बम्बई उस दिन सीमा (Verge) पर पहुँच गई थी,जिस दिन राजेश ने मुझसे पूछा था कि 'श्रीमाताजी बारिश का क्या है, बारिश का क्या है ,बारिश का क्या हैं? परन्तु मैने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो उसने कहा, ' श्रीमाताजी, मैं जानता हूँ कि आप बम्बई के लोगों से नाराज हैं, एक बार फिर उन्हें क्षमा कर दें। और उसी रात से यहाँ बारिश होने लगी। परन्तु आगे आने वाली आपदा के बारे में सावधान रहें, ये बात मैने सभी बम्बई के लोगों को बतानी थी। जब–जब भी मैं वापिस आती हूँ मुझे सहज–योगियों की बेवकूफी दिखाई देती है कि वो किसी एक व्यक्ति के पीछे हो जाते हैं। बम्बई के लोग अभी तक भी यह नहीं जानते कि आगे उन पर कौन सी विपत्ति आने वाली है। वो इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं कि किस प्रकार उन्हें अमीबा से इस अवस्था तक लाया गया। परमात्मा ने उनके लिए क्या किया और उन्होंने परमात्मा के लिए, पूरे देश के लिए क्या किया! यह अत्यंत खेद की बात है क्योंकि पूरे देश के लोग बम्बई के लोगों का अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं।

बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो परमात्मा के स्थान पर किसी अभिनेता या अभिनेत्री का अनुसरण करने का प्रयत्न करेंगे। यह हमारे सतही स्वभाव की समस्या है। मैं आपको बताती हूँ कि कल हमारा एक बहुत अच्छा कार्यक्रम है और ग्रेगोर, जो की स्विटजरलैंड के एक बैरन के बेटे हैं उनकी पुस्तक 'The Advent' का विमोचन भी होगा। ग्रेगोर जब पहली बार मेरे पास पहुँचे तो मैं स्पष्ट देख पाई कि वह साधक हैं। यद्यपि उस वक्त उसकी स्थिति बहुत खराब थी। वह खंडित मनस्किता (Scizophrenic) रोगी की तरह से बिगड़ा हुआ मामला था। परन्तु मैं देख पाई कि उसके अन्दर एक बहुत गहन साधक विद्यमान् है। उसे सामान्य बुद्धि स्तर पर लाने के लिए मुझे बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा। परन्तु जब आपमें जिज्ञासा ही न हो, जब आप इतने भटक चुके हों, तब आपके साथ क्या होगा, ये बात मैं नहीं जानती।

अतः सावधान रहें, अत्यन्त सावधान रहें। आज का दिन आपको चेतावनी देने का है क्योंकि आपने मुझे कल्कि के विषय में बताने के लिए कहा है। उन्हें हमारे भाल पर स्थापित किया गया है। कल्कि यदि पकड़ा हुआ हो, कलिक का चक्र यदि पकड़ा हुआ हो तो मस्तक पर स्थित श्री बुद्ध बिगड़ जाते हैं। कुण्डलिनी जागृति में हम देखते हैं कि यदि श्री बुद्ध बिगड़े हुए हों तो कुण्डलिनी उठती ही नहीं, पूरा सिर अवरुद्ध हो जाता है। ऐसे लोग कुण्डलिनी को, हम कह सकते है, हंसा चक्र से ऊपर नहीं उठने देते। ज्यादा से ज्यादा आज्ञा चक्र तक कुण्डलिनी उठती है और फिर गिर जाती है, इसका कारण जैसा बताया मैनें बताया था, कि गलत गुरुओं के सामने यदि आपने अपना मस्तक झुकाया

हो तब भी दाई ओर की समस्या खडी हो सकती है। इससे कल्कि का एक पक्ष बिगड जाता है और इस पक्ष में (दाई आज्ञा) असंतुलन बन जाता है। पूरे मस्तक पर यदि उभाड है तो व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि कल्कि चक्र खराब है और कल्कि चक्र यदि खराब हो तो व्यक्ति किसी न किसी भयानक विपत्ति में फंसने वाला होता है। यह आने वाली विपत्ति के चिन्ह है। कल्कि चक्र जब पकड जाता है तो सारी उंगलियां जलने लगती है, हथेलियां और कभी–कभी तो शरीर पर भी भयानक जलन महसूस होती है। कल्कि चक्र के पकडने का अर्थ यह है कि व्यक्ति को कैंसर, कोढ आदि कोई न कोई बीमारी होने लगती है, या तो ऐसी कोई बीमारी होने लगती है और या किसी विपत्ति में फंस कर व्यक्ति का अन्त होने लगता है।

अत: कल्कि चक्र को ठीक तथा संतुलित रखा जाना आवश्यक है। कल्कि चक्र के कम से कम ग्यारह उपचक्र है, उनमें से कम से कम कुछ चक्रों को तो जीवित रखना आवश्यक है ताकि अन्य को बचाया जा सके। परन्तु सारे चक्र यदि नष्ट हो गए तो ऐसे व्यक्ति को आत्साक्षात्कार दे पाना अत्यन्त कठिन कार्य है।

कल्कि को ठीक रखने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए? अपने कल्कि को ठीक रखने के लिए आपके अन्दर परमात्मा का भय होना चाहिए। परमात्मा का भय यदि आपके अन्दर नहीं है, परमात्मा से यदि आप नहीं डरते, इस बात से यदि आप नहीं डरते कि कोई गलत कार्य यदि आपने किया तो परमात्मा का दंड भी है तथा वे दंडित करने वाले परमात्मा हैं, तथा यदि हम दुष्कर्म करते हैं ... ारे लिए विष से परिपूर्ण हैं। इसका यदि भय नहीं है, यह नहीं कि मेरे से या किसी अन्य से छुपा हुआ है, आप स्वय जानते हैं कि आप क्या गलत कर रहे हैं।

आप यदि जानते हैं कि आप पाप कर रहे हैं, अपने हृदय में यदि आप जानते हैं कि मैं पाप कर रहा हूँ तो कृपा करके ऐसा करना छोड दें अन्यथा आपका कल्कि बिगड जाएगा। जब आपमें परमात्मा का भय होगा और आप जानते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है। उनमें हमें उच्च अवस्था तक उठाने की शक्ति है तथा हम पर अपने सभी आशीष की वर्षा करने की शक्ति है। वे अत्यन्त दयालु हैं या हम कह सकते है कि अत्यन्त करुणामय पिता हैं, इतने करुणामय की उससे ऊपर हम सोच भी नहीं सकते। परन्तु वे दंडशक्ति से भी परिपूर्ण हैं। जब वे हम पर क्रोध करते हैं तो हमें अत्यन्त,अत्यन्त सावधान होना होगा। माँ होने के नाते मुझे आपको चेतावनी देनी होगी कि अपने पिता के क्रोध से सावधान हो जाएं क्योंकि यदि वे आप पर कुपित हो गए तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता, कोई नहीं रोक सकता,माँ की करुणा को भी नहीं सुना जाएगा क्योंकि वे कह सकते हैं कि ढील छोडकर आपने अपने बच्चों को बिगाड दिया है। अत: आपको मुझे यह बताना है कि कोई गलत कार्य न करें,अपनी गलतियों से मुझे नाराज न करें। माँ के लिए तो यह सारी बातें कह पाना भी बहुत कठिन है। कोमल हृदय, आपके लिए कोमलता की भावना से परिपूर्ण माँ के लिए ये सब कुछ कहना बहुत कठिन है। परन्तु मुझे आपसे प्रार्थना करनी है कि खिलवाड मत करें, क्योंकि आपके पिता क्रोध से परिपूर्ण हैं, कोई दुष्कर्म यदि आप करेंगे तो वे आपको दंडित कर सकते हैं।

उनके लिए, अपने लिए, अपने आत्मसाक्षात्कार के लिए यदि आप कुछ करेंगे तो आपको उच्च पद पर स्थापित किया जाएगा। आज हो सकता है आप

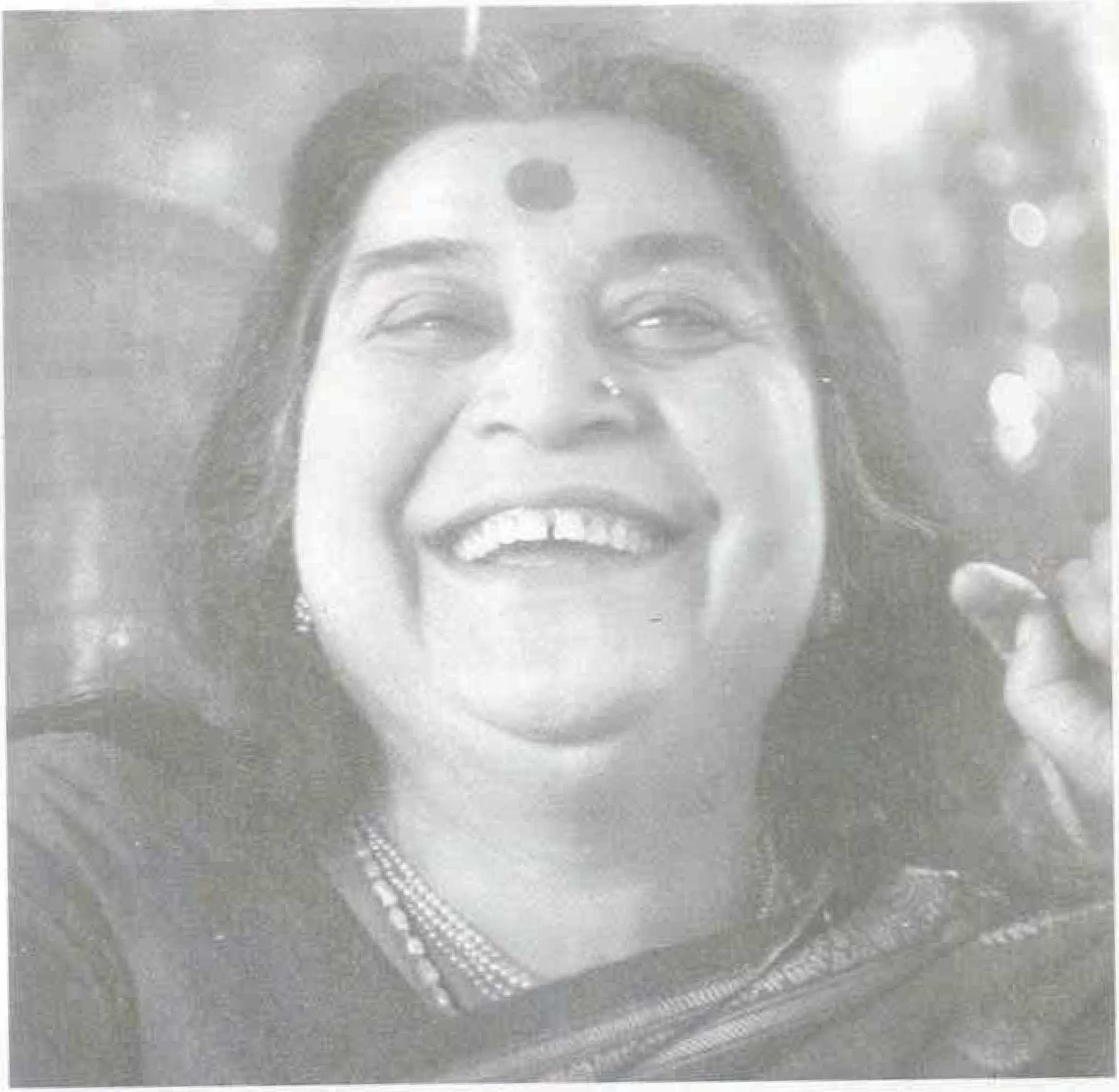

करोड़पति हों,सबसे अधिक धनवान हों,महानतम राजनीतिक नेता हों, हो सकता है आप प्रधानमंत्री हों, आदि कुछ भी हों। परमात्मा की उपस्थिति में जो लोग उन्हें प्यारे हैं उन्हें उच्चतम पद पर आरुढ़ किया जाएगा। सारी सांसारिक चीजें जो आपको अत्यन्त मनोरंजक और सम्मोहनशील लगती है उनका कोई महत्व नहीं है। महत्वपूर्णतम चीज तो यह है कि परमात्मा की दृष्टि में आप कहाँ है। अपने विषय में, अपनी आत्मा के विषय में सहज–योग के माध्यम से पता लगा कर आपको यह सम्बन्ध स्थापित करना होगा और अपना सम्बन्ध आत्मा से जोड़ना होगा।

परमात्मा सबको धन्य करें।

" आपका जो किला है, आपका जो Fortress है वो है निर्विचारिता। निर्विचारिता में जानों, वहीं जान जाओगे सबकुछ। कोई भी काम करना हो तो निर्विचारिता में जाओ। सारा संसारिक काम निर्विचारिता में करते ही साथ में आप जानिएगा कि कहाँ से कहाँ Dynamic हो गया मामला!..........

उम्र का तकाजा नहीं है। निर्विचारिता में रहना चाहिए, यही आपका स्थान है, यही आपका धन है, यही आपका बल है, शक्ति है, यही आपका स्वरूप है, यही आपका सौन्दर्य है, यही आपका जीवन है। निर्विचार, निर्विचार होते ही बाकी का जो बाहर का यन्त्र है वो धूस का पूरा आपके हाथ में घूमने लग जाता है। निर्विचारिता में रहिए, वहाँ पर न समय है, न दिशा है, न कोई छू सकता है, सिर्फ जीवंतता का दर्शन होता है कि जीवन कैसे खिलता है। इसके सौन्दर्य का दर्शन होता है, इसके सामर्थ्य का दर्शन होता है, इसके ऐश्वर्य का दर्शन होता है और इसके सत्य का दर्शन होता है। उस जगह से देखिए जहाँ से जीवन की धारा बहती है। "